आवेग

वर्ष : 2024-25 | वार्षिक पत्रिका | अंक - 5

अपर महानिदेशक का कार्यालय

वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय, सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा-763002

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका, वर्ष : 2024-25

संकल्पना

रक्षा के वैमानिक उत्पादों के निर्माण एवं विकास से संबद्ध विभिन्न संगठनों में आपसी विश्वास और 'आत्म संयम' का वातावरण बनाना और उसे कायम रखना।

मिशन

वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय के नियामक कार्यों को रूपांतरित करना तथा श्रेष्ठ बनाना ताकि सभी संबद्ध संगठन पहली बार तथा हर बार सही काम करें।

मान्यताएं

- गुणवत्ता हमारी विरासत है।
- निष्ठा हमारा प्रतीक है।
- तकनीकी क्षमता हमारी शक्ति है।
- उत्कृष्टता हमारा योगदान है।
- ईमानदारी हमारी पहचान है।
- जवाबदेही हमारा हित प्रहरी है।
- आपसी विश्वास हमारी संस्कृति है।

प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री नागराजा आर.बी
अपर महानिदेशक, कोरापुट

संरक्षक

श्री हर कुमार महान्ती
निदेशक (सुखोई इंजन प्रभाग)

श्री संजीव दीवान
निदेशक (इंजन प्रभाग)

प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

श्रीमती एम. मीनाक्षी
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-।
(राजभाषा प्रभारी अधिकारी)

श्री वेंकटेश बी.
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-।
(भंडार प्रभारी अधिकारी)

संपादक, आवरण सज्जा एवं टंकण

श्री उमेश कुमार प्रजापति
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सत्यमेव जयते

आवेग

वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय, सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा

अंक-5, वर्ष : 2024-25

अनुक्रमणिका

क्र		शीर्षक	पृष्ठ
1	संदेश	गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश	4
2		महानिदेशक महोदय का संदेश	6
3		अपर महानिदेशक महोदय का संदेश	7
4		निदेशक का संदेश	8
5		निदेशक का संदेश	9
6		राजभाषा प्रभारी अधिकारी की कलम से	10
7		संपादकीय	11
8	कहानी, आलेख, कार्यांजलि एवं अल्प रचनाएँ	इंजन से आसमान तक	12
9		प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग	13
10		सुकूनभरी जिंदगी जीने का तरीका	14
11		वनीला आइसक्रीम समस्या : जनरल मोटर्स से गुणवत्ता आश्वासन का सबक	15
12		भारत की रक्षा अवसंरचना और वै. गु. आ. मनि. की भूमिका	17
13		कोरापुट के तकनीकी केंद्र में मनुष्य और मशीन की दिनचार्य	19
14		जिंदगी को जीने का ढंग	20
15		कोरापुट में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा कार्यशाला-सह-अभिविन्यास कार्यक्रम की सारगर्भिता	21
16		आधुनिक युद्ध तकनीकें : भविष्य की लड़ाई का नया आयाम	23
16		जिंदगी की सफर	25
17		रक्षा एवं कृषि में ड्रोन प्रोद्योगिकी	26
18		शारीरिक गतिविधि : मानसिक स्वास्थ्य और कार्य-जीवन संतुलन की कुंजी	28
19		महिला सशक्तिकरण : बदलाव की ओर एक कदम	29
20		हरित और संधारणीय तकनीक	31
21		वैश्विक परिदृश्य में "वसुधैव कुटुंबकम" का महत्व	32
22		कोरापुट से विशाखापट्टनम तक बाइक की सवारी : प्राकृतिक सौंदर्य, रोमांच और अनुभवों से परिपूर्ण यात्रावृत	34
23		खुशहाल जीवन के लिए अच्छे स्वास्थ्य का महत्व	35
24		एयरोस्पेस रक्षा के क्षेत्र में आकार बदलने वाली तकनीक	36
25		मौन इज़हार	39
26	अल्प	वर्ष 2025 के दौरान कार्यालय में नवांगतक अधिकारियों का विवरण	40
27		वर्ष 2025 के दौरान इस कार्यालय से स्थानांतरित अधिकारियों का विवरण	41
28		विविध गतिविधियां	42

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए QR कोड को अपने मोबाइल से स्कैन (गूगल लेंस) करें। बाई ओर दिये गए QR कोड को स्कैन करके आप अनुक्रम में दी गयी सभी रचनाओं को देख व सुन सकते हैं।

वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय, सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा - 763002

दूरभाष : 06853-222119, ई-मेल : ocrikpt.dgaqa@nic.in

नोट: पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं। उससे संपादक मंडल या संरक्षक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : nandlal@anjaniprakashan.com

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

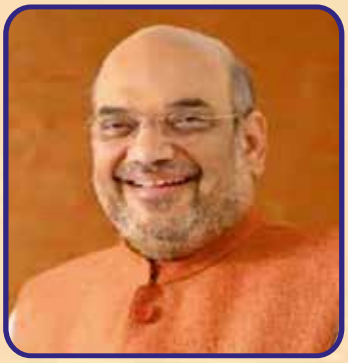

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

महानिदेशक महोदय का संदेश

शिव कांत कपूर
SHIV KANT KAPOOR
अपर महानिदेशक
ADDL. DIRECTOR GENERAL
महानिदेशक (स्थानापन्न)
OFFICIATING DIRECTOR GENERAL

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय
DIRECTORATE GENERAL OF AURONAUTICAL QUALITY ASSURANCE
डिफेंस ऑफिस काम्प्लेक्स, सातवी मंजिल
DEFENCE OFFICE COMPLEX, 7TH FLOOR
ए-ब्लॉक, के. जी. मार्ग, नई दिल्ली - 110001
A-BLOCK, K.G. MARG, NEW DELHI - 110001

मनुष्य की बुनियादी आवश्यकतों को पूरा करने के लिए जिस प्रकार से रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार से विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए भाषा और लिखित अभिव्यक्ति के लिए लिपि की आवश्यकता पड़ती है। इन्हीं राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को अनुच्छेद-343 के अंतर्गत "देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की।"

अपर महानिदेशक का कार्यालय, कोरापुट विगत कुछ वर्षों से जिस प्रकार से राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों को अधिक से अधिक संघ की राजभाषा नीति के अनुरूप आयोजित कर रहा है, यह एक सराहनीय पहल है। यह कार्यालय तकनीकी अधिकारियों के लिए मुख्य रूप से यांत्रिकी ज्ञान का केंद्र रहा है, फिर भी इस कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सेवाकालीन प्रशिक्षणों के माध्यम से अधिक से अधिक कार्यालयीन कामों को हिंदी में कर रहे हैं, यह एक सुखद अनुभव है।

इसी क्रम में राजभाषा के प्रगामी प्रचार-प्रसार के लिए यह कार्यालय अपनी वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका "आवेग" का पाँचवाँ अंक हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर प्रकाशित करने जा रहा है। "आवेग" केवल एक पत्रिका ही नहीं, अपितु हमारी भाषा, संस्कृति और सृजनशीलता का जीवंत दस्तावेज है। इस पत्रिका ने शुरू से ही हिंदीभाषा के प्रचार-प्रसार, साहित्यिक अभिव्यक्ति और नवाचार को एक मंच प्रदान किया है।

पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए मैं कार्यालय प्रमुख, संपादकीय टीम के साथ साथ सभी सृजनकर्ताओं को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(शिव कांत कपूर)

अपर महानिदेशक महोदय का संदेश

नागराजा आर.बी.
NAGARAJA R.B.
अपर महानिदेशक
ADDL. DIRECTOR GENERAL

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय
DIRECTORATE GENERAL OF AURONAUTICAL QUALITY ASSURANCE
अपर महानिदेशक का कार्यालय
O/O ADDL. DIRECTOR GENERAL
सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा-763002
SUNABEDA, KORAPUT, ODISHA-763002

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी हिंदी गृह पत्रिका "आवेग" का पाँचवाँ अंक हिंदी दिवस 2025 के दौरान प्रकाशित होने जा रहा है। यह न केवल हमारे लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, बल्कि यह हमारे कार्यालय में साहित्यिक और रचनात्मक ऊर्जा के निरंतर प्रवाह का भी प्रतीक है।

"आवेग" ने पिछले पाँच वर्षों में एक ऐसा मंच प्रदान किया है जहाँ हमारे अधिकारी और कर्मचारी अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को हिंदी में अभिव्यक्त कर पाते हैं। यह पत्रिका राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है और हमारे भीतर छिपी प्रतिभाओं को सामने लाती है, साथ ही इस कार्यालय में पूरे वर्ष के दौरान आयोजित हुए विभिन्न गतिविधियों की स्मृतियों को भी समग्र रूप से एक स्वरूप प्रदान करती है जो इस बात का द्योतक है कि हम तकनीकी के साथ-साथ अन्य कार्यालयीन आयोजनों को भी उसी उत्साह और उमंग के साथ मनाते हैं।

मैं इस पत्रिका के सफल संपादन और प्रकाशन के लिए संपादक मंडल के सभी सदस्यों और उन सभी योगदानकर्ताओं को हृदय से बधाई देता हूँ, जिनके रचनात्मक लेखों, कविताओं और कहानियों ने इसे इतना जीवंत और पठनीय बनाया है।

मेरी शुभकामनाएँ है कि "आवेग" का यह सफर इसी तरह जारी रहे और आने वाले वर्षों में भी यह हमारे कार्यालय परिवार को जोड़े रखने और प्रेरित करने का माध्यम बना रहे।

शुभकामनाओं सहित,

नागराजा आर बी

(नागराजा आर.बी.)

निदेशक का संदेश

हर कुमार महान्ती
HARA KUMAR MOHANTY
निदेशक (सुखोई इंजन प्रभाग)
DIRECTOR (SED)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय
DIRECTORATE GENERAL OF AURONAUTICAL QUALITY ASSURANCE
अपर महानिदेशक का कार्यालय
O/O ADDL. DIRECTOR GENERAL
सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा-763002
SUNABEDA, KORAPUT, ODISHA-763002

संघ के राजकीय कार्यों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक प्रचारित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "आवेग" के पाँचवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका का शीर्षक "आवेग" अपने आप में बहुत कुछ कहता है- यह हमारी रचनात्मकता, ऊर्जा एवं नए विचारों का प्रतीक है। यह पत्रिका हम सभी के बीच राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को और प्रबल करती है, क्योंकि यह हमें एक-दूसरे की विविध संस्कृतियों, भाषाओं और विचारों को जानने एवं समझने का अवसर प्रदान करती है। जब हम एक-दूसरे के अनुभवों को साझा करते हैं तो हम एक मजबूत और एकजुट परिवार के रूप में विकसित होते हैं।

मैं इस पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए संपादक मंडल और इससे जुड़े सभी लोगों को हृदय से बधाई देता हूँ। इस पहल से हमें एक ऐसा मंच मिला है, जहाँ हम अपने कार्यालय के दैनिक कार्यों से परे, अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं, विचारों, अनुभवों को साझा कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि "आवेग" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे आपसी संवाद और जुड़ाव का एक महत्वपूर्व साधन बनेगी।

आप सभी के साथ-साथ "आवेग" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(हर कुमार महान्ती)

निदेशक का संदेश

संजीव दीवान
SANJEEV DIWAN
निदेशक (इंजन प्रभाग)
DIRECTOR (ED)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय
DIRECTORATE GENERAL OF AURONAUTICAL QUALITY ASSURANCE
अपर महानिदेशक का कार्यालय
O/O ADDL. DIRECTOR GENERAL
सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा-763002
SUNABEDA, KORAPUT, ODISHA-763002

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आवेग" के पाँचावे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल कार्यालय की साहित्यिक और रचनात्मक गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यह पत्रिका इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एक मंच प्रदान करती है जहाँ वे अपनी भावनाओं, विचारों और रचनात्मक कौशल को सहजता से अभिव्यक्त कर सकते हैं। कहानियों, कविताओं, लेखों और यात्रावृत्तांतों के माध्यम से यह पत्रिका हमें एक-दूसरे से जोड़ने के साथ-साथ एक सामूहिक रचनात्मक परिवार को भी विकसित करने का सुअवसर प्रदान करती है।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, सभी योगदानकर्ताओं और उन सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ जिन्होंने इसे साकार करने में अथक परिश्रम किया है। आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार ज्ञान, प्रेरणा और मनोरंजन का श्रोत बनी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

"जय हिन्द"

(संजीव दीवान)

राजभाषा प्रभारी अधिकारी की कलम से

एम. मीनाक्षी
M.MEENAKSHI
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी -1
SENIOR SCIENTIFIC OFFICER-1

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय
DIRECTORATE GENERAL OF AURONAUTICAL QUALITY ASSURANCE
अपर महानिदेशक का कार्यालय
O/O ADDL. DIRECTOR GENERAL
सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा-763002
SUNABEDA, KORAPUT, ODISHA-763002

हम सभी का यह कर्तव्य और सामूहिक जिम्मेदारी है कि हिंदी को राजभाषा के रूप में आगे बढ़ाएं तथा इसकी विकास यात्रा में शामिल होकर इसे गति प्रदान करें, क्योंकि हम सभी जानते हैं कि हिंदी बढ़ेगी तो देश भी बढ़ेगा।

हिंदी केवल संचार का माध्यम नहीं है बल्कि यह हमारी विविधता भरी संस्कृति, सभ्यता और पहचान की धड़कन भी है। इसकी सरलता में मधुरता है, इसकी गहराई में ज्ञान है और इसमें भावनाओं को सहजता के साथ अभिव्यक्त करने की अपार संभावनाएं निहित हैं। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ-साथ अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम सभी अपने विचार, लेख, कविताएँ और अनुभव एक-दूसरे के साथ आसानी से साझा कर पाते हैं।

हिंदी प्रकोष्ठ और अपने सहयोगियों की ओर से मैं पत्रिका के मुख्य संरक्षक श्री नागराजा आर.बी., अपर महानिदेशक, कोरापुट, संरक्षक श्री हर कुमार महान्ती, निदेशक (सुखोई इंजन प्रभाग) एवं श्री संजीव दीवान, निदेशक (इंजन प्रभाग) के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ कि आपके मार्गदर्शन, सहयोग और विश्वास के कारण “आवेग” पत्रिका के पाँचवें अंक का कुशल संपादन और प्रकाशन संभव हो पा रहा है। साथ हीं इस पत्रिका को अपने रचनात्मक विचारों, लेखों, कविताओं से समृद्ध करने के लिए मैं कार्यालय परिवार के सभी वरिष्ठ अधिकारियों, साथियों और कर्मचारियों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

एम. मीनाक्षी
(एम. मीनाक्षी)

संपादकीय

वरिष्ठ अधिकारीगण, सहयोगियों एवं प्रिय पाठकों,

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "आवेग" का एक और नया अंक आप सभी सुधिजनों के हाथों में सौंपते हुए मुझे असीम हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका इस कार्यालय परिवार की साहित्यिक और सांस्कृतिक संगम का प्रतीक है, जो हमें अपनी राजभाषा के साथ जोड़ने का कार्य करती है। यह पत्रिका केवल शब्दों का संकलन नहीं है, अपितु कार्यालय में सेवारत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत दस्तावेज है।

आज जब तकनीकी और वैश्वीकरण की तेज रफ्तार में भाषाएं अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही हैं, ऐसे समय में हिंदी को कार्यालयीन संवाद और अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना एक सशक्त कदम है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यों की झलक देती है, बल्कि हमारी भाषा, संस्कृति और संवेदनाओं को भी सम्मान देती है। इस डिजिटल युग में, जहाँ अंग्रेजी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, हमारी हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा के प्रगामी प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान दे रही हैं।

इस अंक में आपको विभागीय गतिविधियों की तस्वीरी जानकारी के साथ-साथ रचनात्मक और समसामयिक लेख, कविताएं और संस्मरण पढ़ने को मिलेंगे, साथ ही कार्यालय के अधिकारियों के बच्चों के सृजनात्मक विचारों से भी रूबरू होंगे। यह प्रयास तभी सफल होगा जब आप न केवल इसे पढ़ें, बल्कि अपनी रचनात्मकता से इसे और समृद्ध करें।

आइए हम सब मिलकर हिंदी को न केवल बोलचाल की भाषा, बल्कि कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाएं। आप सभी की सक्रिय सहभागिता ही इस पत्रिका की आत्मा है।

"भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, वह संस्कृति की आत्मा होती है। जब हम अपनी भाषा में सोचते हैं, तो हम अपनी जड़ों से जुड़ते हैं।"

उमेश।

(उमेश कुमार प्रजापति)

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

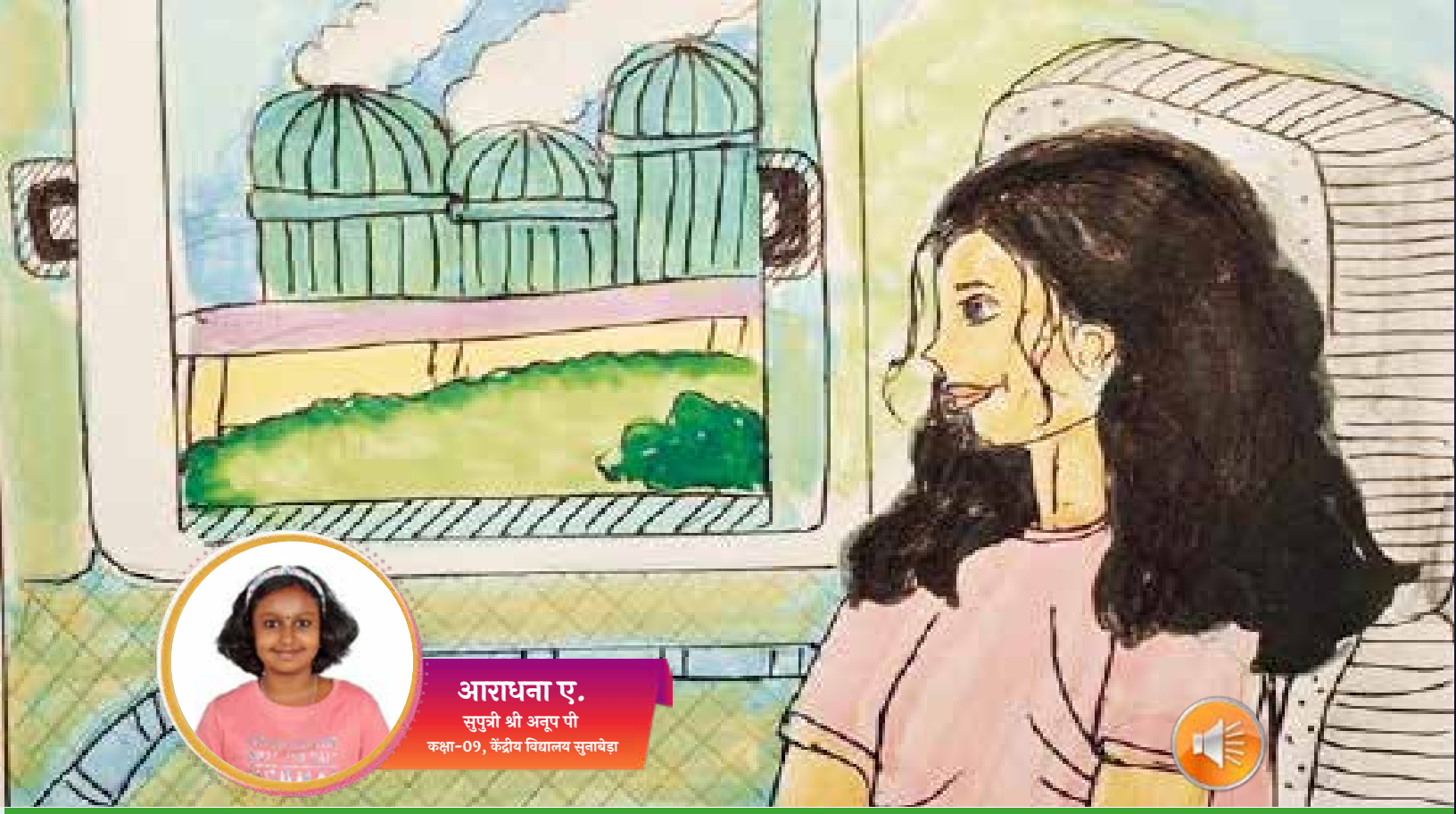

आराधना ए.
सुपुत्री श्री अनूप पी
कक्षा-09, केंद्रीय विद्यालय सुनाबेड़ा

इंजन से आसमान तक

हर दिन सुबह स्कूल बस द्वारा केंद्रीय विद्यालय, नौसेना आयुध भंडार, सुनाबेड़ा जाते हुए मुझे कुछ बड़ी संरचनाएँ दिखाई पड़ती है और कभी-कभी उसके अंदर से बहुत तेज़ आवाज़ भी सुनाई पड़ती है। एक विशाल ढांचा और मज़बूत संरचना से निकलती हुई आवाज़ सुबह के दृश्य को और भी मनोरम बना देती है।

एक दिन छुट्टी वाले दिन अचानक से वह आवाज़ मेरे दिमाग़ में गूंजने लगी तो मैंने जिज्ञासावश अपने पिताजी से इसके बारे चर्चा की तो उन्होंने बताया कि "जहाँ से आवाज़ आती है, उस स्थान पर इंजन का परीक्षण किया जाता है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, कोरापुट प्रभाग इंजन निर्माण और परीक्षण के लिए जाना जाता है..." फिर मुझे हिएलि के द्वार संख्या-02 (एनएसी गेट) पर लगे इंजन की वह तस्वीर याद आई और फिर से सोचने लगी कि इतने बड़े इंजन कैसे बनते हैं.....?

कई बार मैं सोचती हूँ कि काश मैं भी इतनी बड़ी कंपनी में इंजीनियर होती। अगर परीक्षण इतना शोरगुल वाला है, तो विमान में फिट करते समय कितना शोरगुल होगा.....? इंजन को आसमान में उड़ाने के लिए उसे चलाने वाला पायलट कितना महत्वपूर्ण और साहसी होगा.....

इससे मुझे अपने पिछली स्कूल की याद आ गई। केंद्रीय विद्यालय, डीआरडीओ बैंगलुरु जहाँ से भारत के बहादुर और साहसी पायलट विंग कमांडर अभिनंदन ने पढ़ाई की थी...

यह पहली बार था जब हमारे जैसे विद्यार्थियों को यह एहसास हुआ कि हम अपनी पाठ्यपुस्तकों में जिन युद्ध की कहानियों को पढ़ते हैं, वे आज की दुनिया से वाकई अलग हैं। सर्जिकल स्ट्राइक में भारतीय वायुसेना की कितनी अहमियत है हम सबने इसे जाना और देखा भी। मुझे मेक इन इंडिया के अंतर्गत रक्षा उत्पादन से जुड़े उन सभी भारतीय उत्पादक कंपनियों के साथ-साथ उन सभी पायलटों पर गर्व है जो हमारे देश की सुरक्षा लिए इतने विशाल युद्धक विमानों को इतनी उचाइयाँ प्रदान करते हैं।

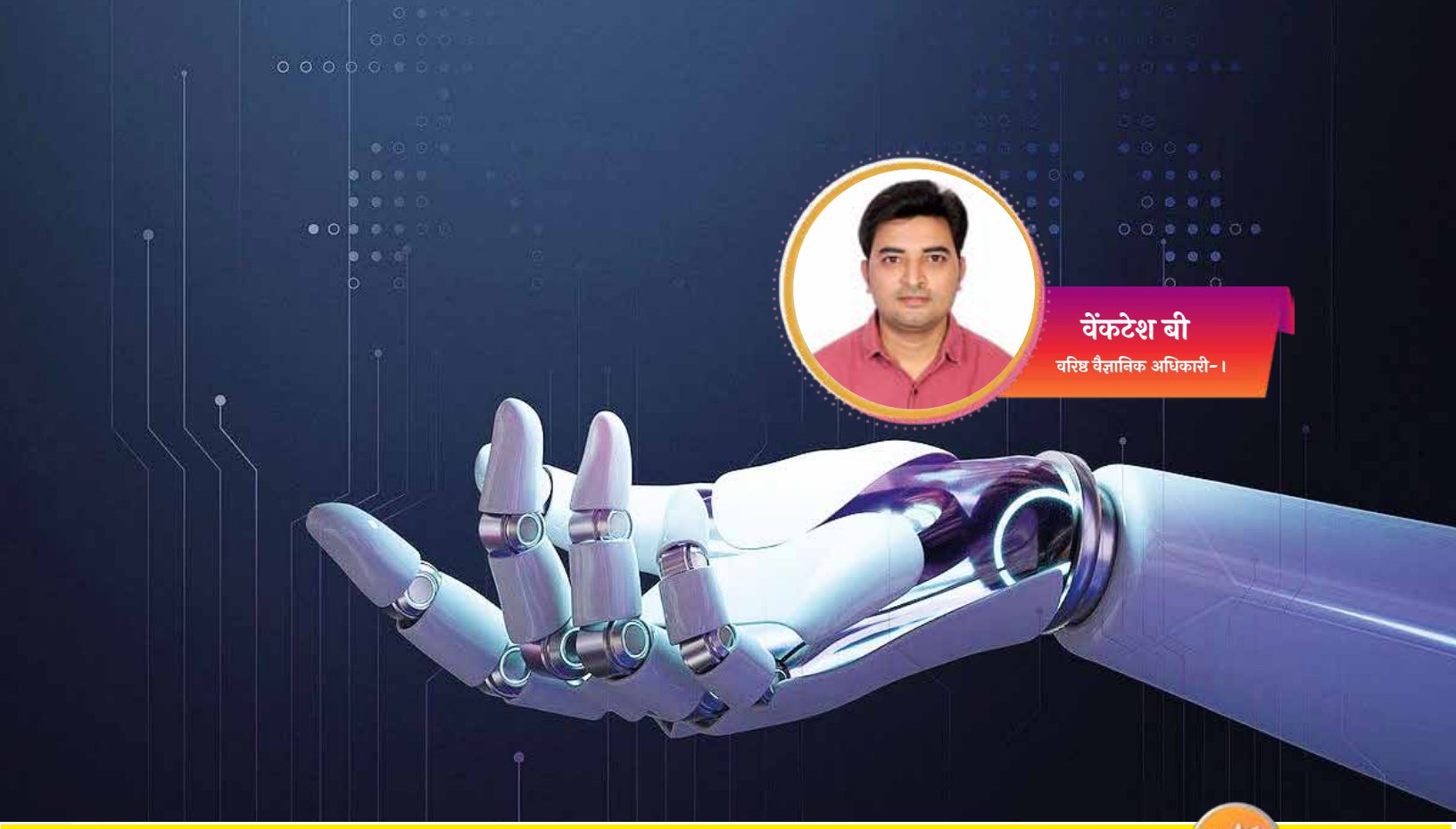

वेंकटेश बी
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग

प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग का परिचय: प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग कृत्रिम मेधा (एआई) मॉडल्स के लिए वांछित परिणाम प्राप्त करने हेतु स्पष्ट और विशिष्ट निर्देश तैयार करने की प्रक्रिया है। इसमें ऐसे प्रश्न या आदेश तैयार करना शामिल है जो एआई को समझने और सटीक प्रतिक्रिया देने में मार्गदर्शन करते हैं। अच्छे प्रॉम्प्ट एआई को प्रश्नों के उत्तर देने, लिखने या समस्याओं को प्रभावी ढंग से हल करने जैसे कार्यों में मदद करते हैं।

प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग की महत्ता: प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग महत्वपूर्ण है क्योंकि एआई सुचारू रूप से कार्य करने के लिए निर्देशों पर निर्भर रहता है। स्पष्ट प्रॉम्प्ट भ्रम को कम करते हैं, सटीकता में सुधार करते हैं और समय बचाते हैं। उचित प्रॉम्प्ट के बिना एआई अस्पष्ट या गलत प्रतिक्रियाएं दे सकता है। प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग में महारत हासिल करके उपयोगकर्ता कार्य, रचनात्मकता या सीखने के लिए एआई की पूरी क्षमता का उपयोग कर सकते हैं।

प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग कैसे एआई के उपयोग को बढ़ाती है: अच्छी तरह से तैयार किए गए प्रॉम्प्ट, एआई को विभिन्न क्षेत्रों में और भी उपयोगी बनाते हैं। उदाहरण के लिए- शिक्षा के क्षेत्र में प्रॉम्प्ट एआई को जटिल विषयों को सरलता से समझाने में मदद कर सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में ये रिपोर्ट या उससे संबंधित विचार सृजित कर सकते हैं। प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग यह सुनिश्चित करती है कि एआई उपयोगकर्ता की जरूरतों को समझने, जिससे यह वास्तविक दुनियाँ की समस्याओं को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन जाता है।

एआई और प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग का भविष्य: एआई का भविष्य उज्ज्वल है, जिसमें प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग की अहम् भूमिका होगी। जैसे-जैसे एआई और ज़्यादा स्मार्ट होता जाएगा, उसे दिशा देने के लिए बेहतर प्रॉम्प्ट की ज़रूरत होगी। प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग ज़्यादा जटिल कार्यों को संभालने के लिए विकसित होगी, जिससे एआई सभी के लिए सुलभ हो जाएगा। यह स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में नवाचार को बढ़ावा देगा।

एयरोस्पेस क्षेत्र में प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग और एआई: एयरोस्पेस में प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग, एआई को उड़ान पथ अनुकूलन,

रखरखाव पूर्वानुमान और सुरक्षा विश्लेषण जैसी जटिल समस्याओं को हल करने में मदद करती है। स्पष्ट प्रॉम्प्ट एआई को विशाल डॉटा संसाधित करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे दक्षता और सटीकता में सुधार होता है। उदाहरण के लिए- इंजीनियरिंग प्रॉम्प्ट का उपयोग करके एआई को उपग्रह चित्रों का विश्लेषण करने या विमान डिज़ाइनों का अनुकरण करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे उद्योग में नवाचार और सुरक्षा बढ़ती है।

सार के रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग प्रभावी एआई उपयोग के रीढ़ की हड्डी है। यह सुनिश्चित करती है कि एआई सटीक और उपयोगी परिणाम प्रस्तुत करे। जैसे-जैसे एआई का विकास होगा, प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग और भी महत्वपूर्ण होती जाएगी और यह इस बात को आकार देगी कि हम तकनीक के साथ कैसे बातचीत करते हैं। अच्छे प्रॉम्प्ट को बनाने की विधि सीखना, उपयोगकर्ताओं को बेहतर भविष्य के लिए एआई की क्षमता का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाएगा।

सुकूनभरी जिंदगी जीने का तरीका

तूँ जिंदगी को जी, उसे समझने की कोशिश न कर।
सुंदर सपनों के ताने-बाने बुन,
उसमें उलझने की कोशिश न कर॥
चलते वक्त के साथ तूँ भी चल,
उसमें सिमटने की कोशिश न कर।
अपने हाथों को फ़ैला, खुल कर साँस ले,
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर॥
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
खामख्वाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर।
कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे,
सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर॥
जो मिल गया उसी में खुश रह,
जो सुकून छीन ले, वो पाने की कोशिश न कर।
रास्ते की सुंदरता का लुफ़्त उठा,
मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर॥

नागेंद्र सिंह पोनिया
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी

जे. नवीन कुमार रेड्डी
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

वनीला आइसक्रीम समस्या: जनरल मोटर्स से गुणवत्ता आश्वासन का सबक

विमानन उद्योग में गुणवत्ता आश्वासन (QA) टीम कुछ खास समस्याओं से निपटने की आदी होती हैं। जैसे- हाइड्रोलिक लीक, सेंसर की खराबी, नेविगेशन में गड़बड़ी इत्यादि, लेकिन कभी-कभी ऐसी शिकायत सामने आती है जो किसी तकनीकी तर्क से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं रखती, जब तक कि गहन जाँच से कोई बहुमूल्य सबक न मिल जाए। जनरल मोटर्स के इतिहास का एक ऐसा ही उदाहरण "वनीला आइसक्रीम समस्या" है, जिसका विमानन गुणवत्ता आश्वासन से बहुत समानता है।

ग्राहक की असामान्य शिकायत: एक पॉन्टिएक मालिक ने बताया कि "मेरी कार केवल तभी चालू नहीं होती जब मैं वनीला आइसक्रीम खरीदता हूँ।" पहले तो यह बात बेतुकी लगी, बिल्कुल वैसा ही जैसे कोई पायलट रखरखाव लॉगबुक में लिखता है, "विमान केवल टार्मैक-5 पर पार्क करने पर ही विद्युत खराबी दिखाता है, बाकी सभी टार्मैक पर सब ठीक रहता है।" लेकिन ग्राहक ने ज़ोर देकर पूछा क्या यह सच है?

जाँच: भले ही यह बेतुका लगे, लेकिन जनरल मोटर्स ने इस समस्या को गंभीरता से लिया। एक जनरल मोटर्स के एक इंजीनियर ने इस समस्या को व्यक्तिगत रूप से देखने के लिए कई रातें ग्राहक के साथ बिताई:

- चॉकलेट आइसक्रीम वाली रात - कार ठीक से चालू हो गई।
- स्ट्रॉबेरी आइसक्रीम वाली रात - कार ठीक से चालू हो गई।
- वनीला आइसक्रीम वाली रात - कार चालू नहीं हुई।

इस पैटर्न में एकरूपता थी: वनीला = चालू नहीं हुई।

मूल कारण का पता लगाना: आगे की जाँच के दौरान, इंजीनियर ने पाया कि समस्या आइसक्रीम की नहीं, बल्कि समस्या समय की कमी की थी। वनीला आइसक्रीम सामने वाले काउंटर पर रखी हुई थी, इसलिए ग्राहक का ठहराव बहुत कम था, जबकि अन्य फ्लेवर के लिए स्टोर के अंदर लंबा इंतज़ार करना पड़ता था।

कार के कार्बोरेटर में वेपर लॉक की समस्या थी, जो गर्मी से संबंधित ईंधन वाष्पीकरण की समस्या थी। कम ठहराव के कारण इंजन पर्याप्त ठंडा नहीं हो पा रहा था जबकि लंबे ठहराव के दौरान इंजन को ठंडा होने के लिए

पर्याप्त समय मिल पा रहा था। इसलिए कम ठहराव वाली जगह पर इंजन स्वतः लॉक हो जा रहा था जबकि अधिक ठहराव वाली जगह इंजन में कोई समस्या नहीं आती थी।

विमानन गुणवत्ता आश्वासन में समानताएँ: विमानन गुणवत्ता आश्वासन (एक्यूए) को अक्सर "वेनिला आइसक्रीम" जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जहाँ लक्षण ट्रिगर का मूल कारण से कोई संबंध नहीं होता है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

1. **असामान्य पायलट रिपोर्ट:** एक विमान चालक (पायलट) रिपोर्ट कर सकता है कि "मापयंत्र (इंस्ट्रूमेंट) में खराबी केवल थोड़ी देर रुकने के बाद आती है।" इसकी वजह कम कूलिंग एयरफ़्लो के कारण एवियोनिक्स का ज़्यादा गरम होना हो सकता है- स्वयं के कारण विलंब नहीं।
2. **पर्यावरणीय और परिचालन ट्रिगर:** जिस प्रकार आइसक्रीम का स्वाद (flavor) वास्तव में समय का एक अप्रत्यक्ष सूचक (proxy) था, उसी तरह विमानन परिचालन संदर्भ जैसे कि गेट का स्थान, टैक्सी वे पर समय, मौसम, रखरखाव का शेड्यूल किसी समस्या के असली कारण का अप्रत्यक्ष सूचक हो सकता है।
3. **समस्या को दोहराने का महत्व:** जनरल मोटर्स के इंजीनियर ने कई परिदृश्यों का परीक्षण किया- यह सिद्धांत रखरखाव दल पर भी लागू होता है जो किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले अलग-अलग परिस्थितियों में खराबी को दोहराकर देखते हैं।
4. **प्रत्यक्ष कारण से आगे बढ़कर सोचना:** किसी विमान प्रणाली में "दोष" का पता प्रणाली में नहीं, बल्कि रैंप तापमान, रखरखाव अनुक्रम या यहाँ तक कि पायलट की आदतों के पैटर्न जैसे बाहरी कारकों से भी लगाया जा सकता है।
5. **डॉटा-संचालित जाँच:** जनरल मोटर्स मामले की तरह, विमानन गुणवत्ता आश्वासन डेटा सहसंबंध पर आधारित है- खराबी की घटनाओं को परिचालन मापदंडों (उड़ान चरण, अवधि, तापमान, टर्नअराउंड समय) से जोड़ना इत्यादि।

कहानी से गुणवत्ता आश्वासन से संबंधित सीख लेने वाली बातें:

- बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनें- कोई भी रिपोर्ट इतनी अजीब नहीं होती कि उसकी जाँच न की जा सके।
- वास्तविक परिस्थितियों में पुनः प्रस्तुत करें- विमान का परीक्षण उसी परिचालन संदर्भ में करें।
- परिचालन पैटर्न में सहसंबंध स्थापित करें- कभी-कभी ट्रिगर अप्रत्यक्ष होता है।
- लक्षण पर नहीं, बल्कि मूल कारण पर ध्यान केंद्रित करें - पुनरावृत्ति को रोकने के लिए अंतर्निहित समस्या का समाधान करें।

निष्कर्ष: गुणवत्ता आश्वासन का अर्थ है वास्तविक परिचालन और तकनीकी प्रदर्शन के बीच संबंध स्थापित करना, भले ही पहला बिंदु कुछ अप्रत्याशित ही क्यों न हो। "वेनिला आइसक्रीम समस्या" हमें याद दिलाती है कि गुणवत्ता आश्वासन केवल स्पष्ट दोषों को पहचानने के बारे में नहीं है। यह ध्यान से सुनने, पैटर्न का अवलोकन करने और उपयोगकर्ता अनुभव और उत्पाद प्रदर्शन के बीच संबंध स्थापित करने के बारे में है। गुणवत्ता आश्वासन (QA) में प्रत्येक ग्राहक शिकायत सीखने, सुधार करने और नवाचार करने का एक अवसर है।

भारत की रक्षा अवसंरचना और वै.गु.आ.मनि. की भूमिका

शुभम बंसल
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II

परिचय: भारत एक विशाल भूभाग वाला देश है जिसकी सीमाएं विभिन्न भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियों से घिरी हुई हैं। इन परिस्थितियों को देखते हुए एक सशक्त और आत्मनिर्भर रक्षा अवसंरचना का होना अत्यंत आवश्यक है। समय के साथ भारत ने रक्षा उत्पादन, अनुसंधान, परीक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण में उल्लेखनीय प्रगति की है। इसी रक्षा प्रणाली का एक अहम हिस्सा है- वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय (वै.गु.आ.मनि.)

वै.गु.आ.मनि. की भूमिका: वै.गु.आ.मनि., यानी वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय के अधीन एक तकनीकी संगठन है। यह संस्था सैन्य विमानन सामग्रियों की गुणवत्ता और उड़न-योग्यता (Airworthiness) सुनिश्चित करती है, चाहे वे स्वदेशी विमान हो, मिसाइल सिस्टम हो या फिर आयातित पुर्जे, हर स्तर पर वै.गु.आ.मनि. का निरीक्षण और प्रमाणन आवश्यक होता है।

वै.गु.आ.मनि. का कार्य केवल तकनीकी निरीक्षण तक सीमित नहीं है। यह संगठन गुणवत्ता मानकों का निर्धारण, उत्पादन प्रक्रियाओं की निगरानी और प्रक्रिया सुधार हेतु सलाह देने जैसे कार्यों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे सेनाओं की परिचालन क्षमता और मिशन रेडिनेस सुनिश्चित होती है।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा भारतीय इंजीनियरिंग सेवा के अंतर्गत चयनित वै.गु.आ.मनि. प्रशिक्षुओं के लिए राष्ट्रपति महोदया का संदेश: पिछले कुछ दिनों पहले भारत की सम्माननीय राष्ट्रपति महोदया ने वै.गु.आ.मनि. सेवा के प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: "प्रिय रक्षा वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन सेवा (DGAQA) के प्रशिक्षुओं! आपको डिज़ाइन, विकास, उत्पादन, ओवरहाल और मरम्मत के दौरान सैन्य वायुयानों एवं उपकरणों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। वर्तमान वैश्विक भू-राजनीतिक परिदृश्य में, इस भूमिका का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। सैन्य विमानन में गुणवत्ता केवल तकनीकी मानकों को पूरा करने तक सीमित नहीं है, यह संचालन सुरक्षा, मिशन तत्परता, विश्वसनीयता और रणनीतिक श्रेष्ठता का आधार है। आपकी प्रमुख जिम्मेदारी है कि सभी सैन्य वायुयान सामग्रियाँ, चाहे वे स्वदेशी हों या आयातित, उच्चतम वैश्विक मानकों के अनुरूप गुणवत्ता और उड़न-योग्यता (Airworthiness) आवश्यकताओं

को पूरा करें। रक्षा क्षमताओं को सुदृढ़ करने के लिए केवल सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को मज़बूत करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि निजी क्षेत्र को सक्षम बनाना और उसका मार्गदर्शन करना भी उतना ही आवश्यक है। नीति समर्थन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के माध्यम से यदि निजी उद्यमों को रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत किया जाए तो भारत स्वदेशीकरण के प्रयासों को तेज कर सकता है और स्वयं को वैश्विक रक्षा निर्माण केंद्र के रूप में स्थापित कर सकता है। वर्तमान "रक्षा सुधार वर्ष" (Defence Reforms Year) के दौरान आपको चाहिए कि आप नवाचार आधारित दृष्टिकोण अपनाएँ, जिससे हमारी सशस्त्र सेनाएँ बहु-डोमेन एकीकृत अभियानों में सक्षम, तकनीकी रूप से उन्नत और युद्ध के लिए सदैव तत्पर बन सकें।"

सम्माननीय राष्ट्रपति महोदया का यह संदेश वै.गु.आ.मनि. की भूमिका को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि इस संगठन की जिम्मेदारी केवल निरीक्षण करना ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की रक्षा क्षमताओं को भविष्य के लिए तैयार करना भी है।

आत्मनिर्भर भारत में वै.गु.आ.मनि. का योगदान: आत्मनिर्भर भारत अभियान में वै.गु.आ.मनि. की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि भारत में निर्मित सैन्य सामग्रियाँ न केवल सेनाओं की ज़रूरतों को पूरा करें, बल्कि वैश्विक गुणवत्ता मानकों पर भी खरी उतरें।

हिंदुस्तान ऐरोनॉटिकल लिमिटेड, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, भारत डायनामिक्स लिमिटेड जैसी संस्थाओं के साथ समन्वय में कार्य करते हुए वै.गु.आ.मनि. गुणवत्ता और उड़न-योग्यता का प्रतीक बन चुका है। इसके अतिरिक्त, निजी क्षेत्र को रक्षा उत्पादन में भागीदारी हेतु सक्षम बनाना, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को गुणवत्ता मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण देना और निर्यात योग्य रक्षा सामग्रियों को अंतरराष्ट्रीय प्रमाणीकरण दिलवाना- ये सभी कार्य वै.गु.आ.मनि. के दायरे में आते हैं।

निष्कर्ष: भारत की रक्षा अवसंरचना जितनी भौतिक संसाधनों पर आधारित है, उतनी ही यह गुणवत्ता, नवाचार और रणनीतिक सोच पर भी आधारित है। वै.गु.आ.मनि. इस संरचना की वह मजबूत कड़ी है, जो सैन्य उड़ान सुरक्षा से लेकर तकनीकी श्रेष्ठता तक, हर पहलू में योगदान देता है।

राष्ट्रपति महोदया का संदेश हमें यह याद दिलाता है कि वै.गु.आ.मनि. का कार्य सिर्फ एक तकनीकी ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह देश की रक्षा और रणनीतिक सशक्तिकरण का आधार है। ऐसे में प्रत्येक अधिकारी, इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ को चाहिए कि वे इस उत्तरदायित्व को पूरी निष्ठा, दक्षता और प्रतिबद्धता के साथ निभाएँ। यह एक गुणवत्ता आधारित, आत्मनिर्भर और सामरिक रूप से सक्षम भारत की दिशा में हमारी सामूहिक यात्रा है और वै.गु.आ.मनि. उसकी अगुवाई कर रहा है।

अनूप पी
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी- II

कोरापुट के तकनीकी केंद्र में मनुष्य और मशीन की दिनचार्य

अपर महानिदेशक का कार्यालय, कोरापुट के इंजीनियर मशीनरी कमियों, खामियों और उत्पादों की गुणवत्ता से बखूबी निपटने के लिए अपने बहुमुखी ज्ञान और कौशल के लिए जाने जाते हैं। चुनौतियाँ तो अनगिनत हैं और ऐसे अनगिनत चुनौतियों से निपटने के लिए पेशेवर कौशल और उपयुक्त तकनीकी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण पुर्जों और सामानों की आपूर्ति समय पर न होना, उपकरणों के गुणवत्तापूर्ण निर्माण को सुनिश्चित करने को और भी चुनौतीपूर्ण बना देती है।

हम सभी मशीनों की सहायता से काम करने वाले पेशेवर इंजीनियरों के बारे में कुछ जानकारी रखते हैं, लेकिन आज हम इन मशीनों के बारे में कुछ जानने की कोशिश करेंगे कि इनसे हमारी बातचीत की प्रक्रिया क्या होती है...

इंजीनियर: अरे यार, आज कैसा चल रहा है?

मशीन: ठीक-ठाक ही चल रहा है, पर साँस मुश्किल से आ पा रही है क्योंकि कल आपने मुझे बिना उचित कूल-डाउन के 16 घंटे लगातार दौड़ाया था।

इंजीनियर: मुझे पता है भाई, लेकिन क्या करूं उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करना है, पर तुम तो ऐसे ही उच्च लक्ष्य के दबाव में काम करने के लिए बने हो, है ना?

मशीन: हाँ, आप सही कह रहे हो। मुझे मज़बूती के साथ बनाया गया है, पर इसका मतलब यह नहीं कि 24 घंटे लगातार काम करता रहूँ। मेरी बियरिंग गरम हो जाती है, मेरे सेंसर थक जाते हैं और मेरा तेल खराब हो जाता है। आप अपना ही देखो, अगर एक दिन खाना और सोना न हो तो क्या स्थिति हो जाती है, है ना?

इंजीनियर: बात तो सही कह रहे हो भाई, पर तुम इंसानों की तरह शिकायत नहीं करते, यह तुम्हारी खासियत है।

मशीन: नहीं, शिकायत करने की खासियत मेरे अंदर नहीं है। मेरा अलार्म ही मेरी एकमात्र आवाज़ है। जब मैं असामान्य रूप से कंपन करने लगता हूँ या तेज़ गति से शोर करने लगता हूँ या बहुत धीमा हो जाता हूँ, तो यही मेरी मदद के लिए पुकार होती है।

इंजीनियर: मुझे लगता है हम आपके इन संकेतों को अक्सर हल्के में ले लेते हैं।

मशीन: नहीं, मेरे इन संकेतों के समय आप कुछ करने लगते हैं जैसे- जब मैं गर्म होता हूँ तो आप बोल्ट कसते हो, जब मैं संरेखित नहीं होता तो ज़्यादा कैलिब्रेट करते हो, लेकिन कभी-कभी मुझे सचमुच आराम के कुछ पल या समय पर जाँच की ज़रूरत होती है।

इंजीनियर: तो तुम मुझसे क्या चाहते हैं?

मशीन: दोस्ती .....मैं जिस तरह से गुनगुनाता हूँ, उसे सुनो। मेरे सॉफ़्टवेयर को अपडेट रखो और इंस्टॉलेशन में जल्दबाज़ी न करो। मुझे सिर्फ़ आपातकालीन देखभाल ही नहीं, बल्कि निवारक रखरखाव भी दो और चेतावनी लाइट को कभी भी नज़रअंदाज़ मत करो।

इंजीनियर: तुम सही कह रहे हो। तुम्हारे बिना, हम रुक जाते हैं। हम इंजीनियरों को तुम्हारे साथ एक उपकरण की तरह कम और एक टीममेट की तरह ज़्यादा व्यवहार करना चाहिए।

मशीन: मैं बस यही चाहता हूँ। हुर्रे.....बस यही तो चाहिए था कि मनुष्य भी जरा दूर की सोचे। बिल्कुल टारगेट पर ही ना टिका रहे। गुणवत्ता एक ऐसी अनोखी चीज़ है जो एक बार से नहीं बल्कि वर्षों की मेहनत और तकनीकी समर्पण से आती है।

"आख़िरकार, मैं तुम्हारे लिए काम नहीं करता। मैं तुम्हारे साथ काम करता हूँ।"

जिंदगी को जीने का ढंग

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,
अंदर मेरे ये कैसा शोर है?
हँसा मुझ पर फिर बोला,
चाहतें तेरी कुछ और थी
पर तेरा रास्ता कुछ और है।
रूह को संभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है।
खुला आसमान, चाँद तारे चाहत है तेरी,
पर बंद दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है।
सपने देखता है, खुली फिज़ाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है॥

एम. मीनाक्षी
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-।

कोरापुट में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राज़भाषा कार्यशाला-सह-अभिविन्यास कार्यक्रम की सारगर्भिता

उमेश कुमार प्रजापति
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हम सभी जानते हैं कि संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को "संघ की राजभाषा" के रूप में अंगीकार किया था जिसका जिक्र भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड (1) में यथा वर्णित है: "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी तथा संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।" इसी क्रम में अनुच्छेद 344 के खंड (4) में संसदीय राजभाषा निरीक्षण समिति के गठन के संबंध में प्रावधान निर्धारित किए गए हैं तथा खंड (5) में समिति के कर्तव्यों का जिक्र है और खंड (6) में समिति के प्रतिवेदन पर राष्ट्रपति आदेश/ निदेश के संबंध में बताया गया है।

जैसा ऊपर बताया गया है कि संघ की राजभाषा हिंदी है तो अब प्रश्न उठता है कि आखिर इसके प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी किसकी है? तो इसका जिक्र संविधान के अनुच्छेद 351 में स्पष्ट रूप से किया गया है यथा "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।" अर्थात् इसके प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है।

इसी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए तत्कालीन केंद्र सरकार ने 10 मई 1963 को राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया जिसका प्रमुख उद्देश्य था "उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के संव्यवहार, केंद्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेगी, उपबंध करने के लिए अधिनियम" इसी अधिनियम की धारा-8 में केंद्र सरकार को राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार के संबंध में "नियम बनाने की शक्ति" प्रदान की गई।

इसी शक्ति का उपयोग करते हुए केंद्र सरकार ने राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011) बनाया जिसके नियम-12 के अंतर्गत भारत सरकार के प्रत्येक मंत्रालय, मुख्यालय, अधीनस्थ

कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदार संबंधित कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख को दी गई साथ ही इसके उपनियम-02 द्वारा उचित कार्यान्वयन के लिए प्रभावकारी जांच बिंदुओं के निर्धारण के बारे में भी निदेश दिया गया।

संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1989 में अपने चौथे प्रतिवेदन के दौरान भारत सरकार के सभी विभागों द्वारा "अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन जैसे आयोजनों" के संबंध में राष्ट्रपति को अपनी सिफारिश प्रस्तुत की थी जिसे राष्ट्रपति द्वारा कुछ शर्तों के साथ स्वीकृत किया गया और इसका जिक्र चौथे राष्ट्रपति आदेश में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं।

इसी आदेश के अनुरूप वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली के प्रशासनिक प्रधान द्वारा (महानिदेशक, वै.गु.आ.) द्वारा पूरे विभाग के राजभाषा कार्मिकों के लिए प्रत्येक छह माह के अंतराल पर "दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा कार्यशाला-सह-अभिविन्यास कार्यक्रम" आयोजित कराने का निर्देश दिया गया और इसका प्रथम आयोजन महानिदेशक महोदय के मार्गदर्शन में मुख्यालय, वै.गु.आ.मनि., नई दिल्ली में जुलाई 2023 के दौरान किया गया था।

"दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा कार्यशाला-सह-अभिविन्यास कार्यक्रम" के आयोजन से पूर्व वास्तविकता तो यह थी कि इस विभाग के दूसरे क्षेत्र-स्थापनाओं में कार्यरत राजभाषा संवर्ग के अधिकारी एक दूसरे से परिचित नहीं हुआ करते थे जिसके कारण अलग-अलग कार्यालयों में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित नवोन्मेषी पहलों के बारे में जानकारियाँ नहीं मिल पाती थी। इससे राजभाषा संवर्ग में मेरे जैसे नए कार्मिकों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता था। आज प्रत्येक 06 माह के बाद आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम ने इस समस्या का काफी हद तक निवारण कर दिया है।

कोरापुट कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम की सारगर्भिता: महानिदेशक वै.गु.आ., नई दिल्ली के निर्देशानुसार अपर महानिदेशक का कार्यालय, कोरापुट में दिनांक: 29-30 जनवरी 2025 के दौरान विभाग के राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों के लिए "तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा कार्यशाला-सह-अभिविन्यास कार्यक्रम" का आयोजन किया गया था। इस दो दिवसीय आयोजन के दौरान उद्घाटन एवं समापन सत्रों के अतिरिक्त कुल 06 सत्र विभिन्न विषयों पर रखे गए थे। यथा- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत कार्मिकों के नामांकन तथा विभागीय प्रोत्साहन योजनाएं व दावा करने की प्रक्रिया, राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ तथा उसके समाधान, संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों पर अभी तक जारी राष्ट्रपति जी के आदेशों के संकलन पर प्रस्तुतिकरण, संसदीय राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली भरते समय ध्यान रखने वाली प्रमुख बातें, राजभाषा हिंदी और आधुनिक तकनीकें तथा अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में कैसे करें जैसे महत्वपूर्ण विषय रखे गए थे जिस पर अलग-अलग वक्ताओं/ तकनीकीविदों ने मार्गदर्शन किया। 'राजभाषा हिंदी और आधुनिक तकनीकें' विषय वर्तमान परिदृश्य के अनुसार बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है जिस पर डॉ० बालेंदु शर्मा दाधीच, हेड, मार्केटिंग सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, माइक्रोसॉफ्ट एशिया ने सभी राजभाषा अधिकारियों को प्रशिक्षित किया।

कोरापुट अंचल की बात करें तो राजभाषा से संबंधित अखिल भारतीय स्तर का यह पहला भव्य आयोजन था जिसमें विभाग के विभिन्न क्षेत्र स्थापनाओं से आए राजभाषा अधिकारियों ने प्रतिभाग किया था तथा विभिन्न ज्ञानवर्धक सत्रों के माध्यम से अपने राजभाषायी ज्ञान को परिमार्जित किया था। यह आयोजन आपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल रहा और इन आयोजनों से लगातार राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों में राजभाषायी ज्ञान चेतना का विकास हो रहा है।

आधुनिक युद्ध तकनीकें: भविष्य की लड़ाई का नया आयाम

दीपक सुकुमार
कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी

21वीं सदी में युद्ध का स्वरूप केवल मोर्चे और बड़े हथियारों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि तकनीकी प्रगति ने संघर्ष के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। अब निर्णायक बढ़त के लिए स्मार्ट सिस्टम, डॉटा विश्लेषण और नेटवर्क केंद्रित ऑपरेशन अनिवार्य हो गए हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधुनिक रणनैतिक योजना और लक्ष्य निर्धारण में अहम भूमिका निभा रही है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं:

- वास्तविक समय में ख़तरा पहचानना और प्राथमिकता देना।
- इमेज प्रोसेसिंग द्वारा ड्रोन/ टैंक वीडियो से दुश्मन ठिकानों का पता लगाना।
- निर्णय समर्थन प्रणाली, जो कमांडरों को त्वरित निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

ड्रोन और स्वायत्त हथियार: ड्रोन युद्ध के मैदान में गति और सटीकता देने वाले अभिनव उपकरण बन गए हैं। इसकी क्षमताओं को निम्न प्रकार देखा जा सकता है:

- मानव जीवन को जोखिम में डाले बिना निगरानी तथा जासूसी करना।
- स्वायत्त मिसाइल लॉन्चिंग और वास्तविक समय पर टारगेट ट्रैकिंग करना।
- रिमोट ऑपरेशन के अंतर्गत उपग्रह कनेक्टिविटी का उपयोग करके सीमाओं के पार मिशनों को अंजाम देना।

साइबर युद्ध: इलेक्ट्रॉनिक जाल के माध्यम से दुश्मन नेटवर्क और अवसंरचना को लक्ष्य बनाना, नया हथियार बन चुका है। इसके प्रमुख आयाम निम्न प्रकार हैं:

- साइबर हमले से संचार माध्यमों को जाम करना या डेटा चोरी करना।
- डिजिटल जासूसी और छलयोजना से लोकतांत्रिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप करना।
- सतह एवं गहराई स्तर पर रक्षा से संबंधित मल्टी-लेयर साइबर सुरक्षा।

हाइपरसोनिक और अत्याधुनिक मिसाइलें: हाइपरसोनिक मिसाइलें अपनी उच्च गति और अप्रत्याशित फ़्लाइट पैटर्न से रक्षा तंत्र को चौंका देती हैं। इसके निम्नलिखित फ़ायदे हैं:

- पारंपरिक रडार एवं एंटीमिसाइल सिस्टम को चकमा देना।
- लंबी दूरी पर कम प्रतिक्रिया के साथ सटीक निशाना साधना।
- ऊँचे ताप का सामना करने वाली हीट शील्ड तकनीक का उपयोग।

स्पेस वॉरफेयर: अंतरिक्ष अब सिर्फ़ उपग्रहों का क्षेत्र नहीं रहा, बल्कि इसमें हथियार तैनात करना भी शुरू हो गया है। इसके मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

- रिमोट सेंसिंग उपग्रहों द्वारा वैश्विक निगरानी करना।
- एंटी-सैटेलाइट (ASAT) हथियारों से दुश्मन के संपर्क से बचना।
- जीपीएस और संचार नेटवर्क पर हमला कर निर्णायक बाधा का निर्माण करना।

भारत की रणनीति और तैयारी: भारत ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) के नेतृत्व में तकनीकी आत्मनिर्भरता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित महत्वपूर्ण परियोजनाएं चलाई जा रही हैं-

- प्रौद्योगिकी अवशोषण वर्ष 2024 का दृष्टिकोण
- स्वदेशी एंटी-सैटेलाइट क्षमता और उच्च गति के मिसाइल प्रोटोटाइप
- साइबर कमांड की मजबूती और कृत्रिम मेधा चालित निगरानी तंत्र

वैश्विक परिदृश्य: अमेरिका, चीन और रूस जैसे विकसित राष्ट्र भारी निवेश से विघटनकारी तकनीकों को अपने शस्त्रागार में शामिल कर रहे हैं। जैसे:

- क्वांटम संचार और एन्क्रिप्सन पर शोध
- निर्देशित ऊर्जा हथियारों जैसे- लेज़र और माइक्रोवेव हथियार
- मैनट्रूल्स और ऑगमेंटेड रियालिटी-सहायित सैनिक इकाइयाँ

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि आने वाले दशक में युद्ध-विज्ञान का केंद्र डेटा, नेटवर्क और अल्गोरिदमिक निर्णय होगा। स्मार्ट सेंसर, रोबोटिक प्लेटफॉर्म और साइबर-फिज़िकल सिस्टम त्वरित, सटीक और अनपेक्षित लड़ाई के स्वरूप को आकार देंगे।

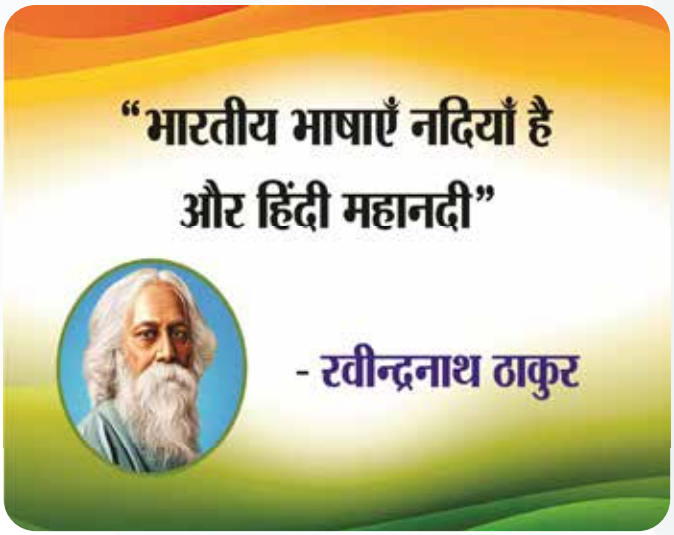

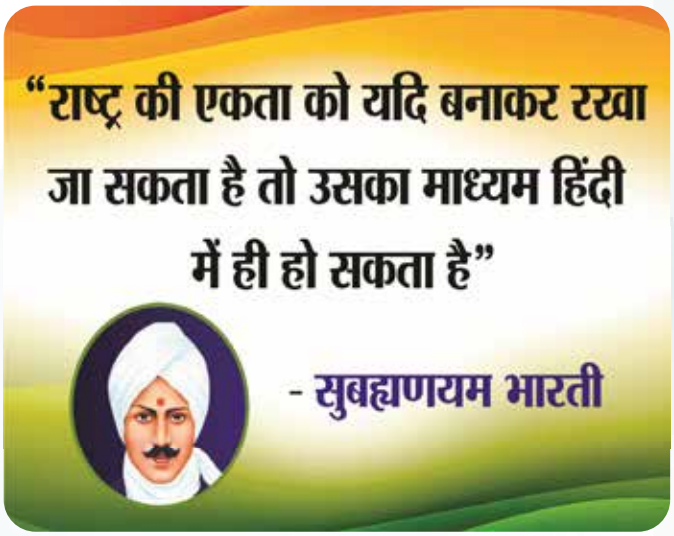

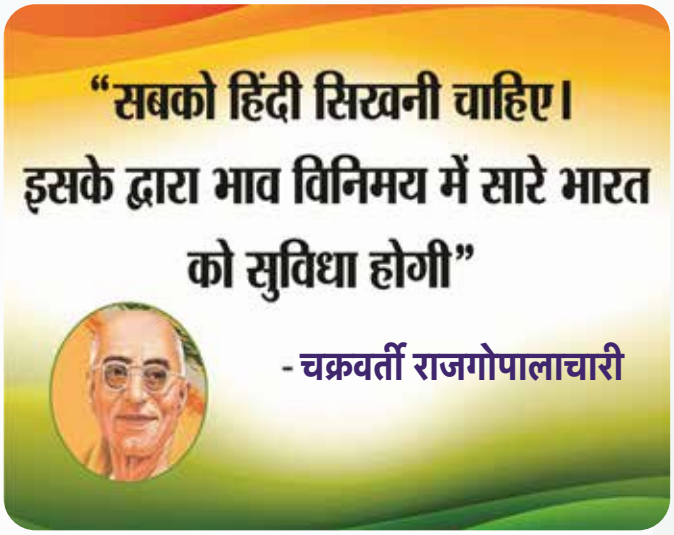

जिंदगी की सफर...

उन सभी को नमन
जो अपने परिवार के लिए
21 से 60 वर्ष तक
घर संभालने में व्यस्त रहे ॥
कैसे कटा 21 से 60 वर्ष
तक का यह सफ़र
पता ही नहीं चला ॥
क्या पाया, क्या खोया,
क्यूँ खोया
पता ही नहीं चला ॥
बीता बचपन, गई जवानी
कब आया बुढ़ापा, पता ही नहीं चला ॥
कल बेटे थे, कब ससुर बन गए,
पता ही नहीं चला ॥

कब पिता से नाना एवं दादा बन गए,
पता ही नहीं चला ॥
कोई कहता सठिया गया,
कोई कहता छा गया,
क्या सच है, पता ही नहीं चला ॥
पहले माँ-बाप की चली,
फिर पत्नी की चली,
फिर बच्चों की चली,
अपनी कब चली, पता ही नहीं चला ॥
पत्नी कहती- अब तो समझ जाओ,
क्या समझें, क्या न समझें,
न जाने क्यों पता ही नहीं चला ॥
दिल कहता जुबान हूँ मैं,
सब कहते नादान हूँ मैं,
इसी चक्कर में, कब घुटने घिस गए,
पता ही नहीं चला ॥

सफ़ेद हो गए बाल, लटक गए गाल,
लग गया चश्मा, कब बदली यह सूरत,
पता ही नहीं चला ॥
समय बदला, मैं भी बदला,
बदल गई मित्र मंडली भी,
कितने छूट गए, कितने रह गए दोस्त,
पता ही नहीं चला ॥
कल तक अठखेलियाँ करते थे दोस्तों के
साथ,
कब वरिष्ठ नागरिक की लाइन में आ गए,
पता ही नहीं चला ॥
बहू, जँवाई, नाते, पोते- खुशियां आई,
कब मुस्कुराई उदास जिंदगी,
पता ही नहीं चला ॥
जी भर के जी लो दोस्तों
फिर न कहना कि पूरी उम्र बीत गई,
मुझे पता ही नहीं चला ॥

राजीब लोचन पाणिग्राही
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-।

सुमित प्रजापत
वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक

रक्षा एवं कृषि में ड्रोन प्रौद्योगिकी

आधुनिक भारत की नई उड़ान में तकनीक का विकास हर दौर में इंसान की ज़रूरतों को नई दिशा देता आया है। आज का दौर ड्रोन तकनीकी का है, जिसने रक्षा और कृषि-दोनों ही क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। ड्रोन या Unmanned Aerial Vehicles (UAVs) न केवल निगरानी और हमले का सशक्त साधन हैं, बल्कि कृषि को भी नई उचाइयाँ प्रदान कर रहे हैं।

रक्षा क्षेत्र: भविष्य के युद्ध का आधार: रक्षा क्षेत्र में ड्रोन का उपयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है:

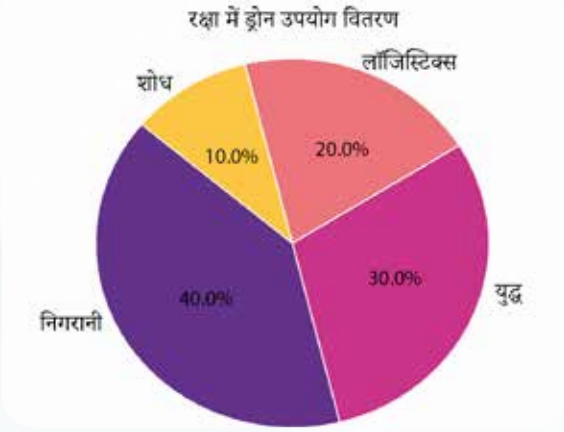

1. **निगरानी और खुफ़िया जानकारी:** सीमाओं पर सुरक्षा के लिए ड्रोन सबसे बड़े हथियार बन चुके हैं। पाकिस्तान और चीन सीमा पर हेरोन और रुस्तम ड्रोन लगातार निगरानी का काम कर रहे हैं जिससे दुश्मन की हर गतिविधि पर नज़र रखी जा सके।
2. **सटीक हमले:** अमेरिका द्वारा अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ में तथा हाल ही में रूस-यूक्रेन युद्ध में ड्रोन का इस्तेमाल सटीक हमलों के लिए किया गया। भारत भी अब सशत्र UAVs को अपनी रक्षा नीति में शामिल कर रहा है।
3. **इलेक्ट्रॉनिक युद्ध:** आधुनिक ड्रोन दुश्मन की संचार प्रणाली और रडार को जाम कर सकते हैं, जिससे युद्ध के मैदान में बढ़त हासिल करना आसान हो जाता है।
4. **लॉजिस्टिक सपोर्ट:** पहाड़ी क्षेत्रों जैसे लद्दाख और उत्तर-पूर्व भारत में सैनिकों तक दवाइयाँ और हथियार

पहुँचाने के लिए अब ड्रोन का प्रयोग किया जा रहा है। यह न केवल समय बचाता है, बल्कि सैनिकों की जान भी सुरक्षित रखता है।

तथ्य झरोखा:

भारत के स्वदेशी ड्रोन: रुस्तम, तपस बीएच, स्विच मानवरहित हवाई वाहन

विदेश से प्राप्त ड्रोन: हेरोन, प्रीडेटर एमक्यू-9

भविष्य: भारत 2030 तक दुनिया का बड़ा ड्रोन हब बनने की दिशा में काम कर रहा है।

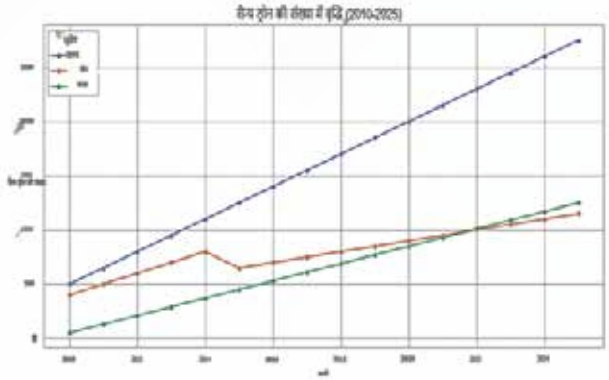

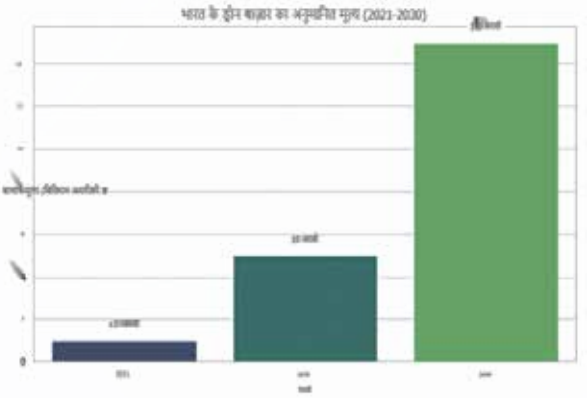

के आकलन में कर रही हैं। इससे किसानों को समय पर मुआवज़ा मिलना आसान होगा।

ड्रोन अब केवल मशीनें नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और कृषि समृद्धि के पंख हैं। रक्षा क्षेत्र में यह सैनिकों की जान बचाकर युद्ध में निर्णायक साबित हो रहे हैं, वहीं कृषि में किसानों की आय दोगुनी करने की दिशा में सहायक हैं। भारत जैसे देश के लिए ड्रोन टेक्नॉलॉजी का विकास केवल आधुनिकीकरण नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और प्रगति का प्रतीक है।

कृषि क्षेत्र: किसानों के लिए नई उम्मीद:

1. **फसल की निगरानी:** ड्रोन की हाई-रिज़ॉल्यूशन कैमरा तकनीक से किसान आसानी से खेतों की स्थिति देख सकते हैं और फसलों में लगने वाले रोग को समय रहते पहचान सकते हैं।
2. **सटीक सिंचाई व उर्वरक छिड़काव:** ड्रोन की मदद से कीटनाशक व उर्वरक कम समय में बड़ी ज़मीन पर छिड़के जा सकते हैं। अनुमान है कि इससे 30-40% तक लागत में कमी और 20% तक उपज में वृद्धि हो सकती है।
3. **फसल आकलन और बीमा:** ड्रोन से प्राप्त डेटा का उपयोग सरकार और बीमा कंपनियाँ फसल बीमा दावों

शारीरिक गतिविधि: मानसिक स्वास्थ्य और कार्य-जीवन संतुलन की कुंजी

तेजस्व नेमा
वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक

आज की तेज़ रफ्तार जिंदगी में मानसिक तनाव, चिंता और थकावट एक आम बात हो गई है। निजी और पेशेवर ज़िंदगी में तालमेल बैठाना कई बार चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ऐसे में शारीरिक गतिविधियाँ जैसे- योग, दौड़ना, तैराकी या यहां तक कि रोज़ाना की सैर- न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ बनाए रखती है, बल्कि मानसिक शांति और संतुलन का भी माध्यम बनती है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव: शारीरिक गतिविधि करने से मस्तिष्क में एंडोर्फ़िन (खुश रहने वाले हार्मोन) का स्राव होता है। यह प्राकृतिक रसायन मूड को बेहतर करता है, तनाव को कम करता है और अवसाद से लड़ने में मदद करता है। नियमित व्यायाम करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और चिंता के लक्षणों में भी कमी आती है। अध्ययनों से यह साबित हुआ है कि दिन में मात्र 30 मिनट की मध्यम शारीरिक गतिविधि जैसे- तेज़ चाल से चलना मानसिक स्वास्थ्य को स्थिर बनाए रखने में सहायक हो सकती है।

व्यक्तिगत जीवन में लाभ: शारीरिक रूप से सक्रिय रहना आत्म-अनुशासन और आत्म-प्रेरणा को बढ़ाता है। यह जीवनशैली को नियमित करता है, नींद की गुणवत्ता बेहतर बनाता है और ऊर्जा के स्तर को ऊँचा रखता है। जब शरीर स्वस्थ होता है, तो मन भी सकारात्मक विचारों से भरपूर रहता है। एक सक्रिय व्यक्ति अपनी भावनाओं पर बेहतर नियंत्रण रख सकता है, जिससे पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों में मधुरता आती है।

पेशेवर जीवन में संतुलन: कार्यस्थल पर लंबे समय तक बैठना, डेडलाइन्स का दबाव और लगातार स्क्रीन के सामने रहना मानसिक थकान का कारण बनते हैं। ऐसे में शारीरिक गतिविधियाँ माइंड को रिफ्रेश करती हैं और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को बढ़ाती हैं। इससे निर्णय लेने की क्षमता, रचनात्मक सोच और उत्पादकता में सुधार होता है। इसके अलावा, नियमित व्यायाम करने वाले लोग समय प्रबंधन में बेहतर होते हैं और प्रोफेशनल लाइफ में अपेक्षाकृत ज़्यादा संतुलन बनाए रखते हैं।

संतुलन का सूत्र: शारीरिक गतिविधि केवल जिम जाने या खेल खेलने तक सीमित नहीं है। यह वह हर क्रिया है जो शरीर को सक्रिय रखे। जैसे- सीढ़ियाँ चढ़ना, बागवानी करना, नाचना या पैदल कार्यालय जाना। ज़रूरी यह है कि इसे दिनचर्या में शामिल किया जाए। काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए:

- हर घंटे के बाद 5 मिनट का ब्रेक लें।
- दिन में कम से कम 30 मिनट टहलने या व्यायाम के लिए निकालें।
- वीकेंड में आउटडोर एक्टिविटीज़ को प्राथमिकता दें।
- स्क्रीन टाइम को सीमित करें और नींद को महत्व दें।

शारीरिक गतिविधि एक ऐसी सरल लेकिन प्रभावशाली आदत है, जो न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सशक्त बनाती है बल्कि व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सामंजस्य स्थापित करने में भी मदद करती है। आज जब हर कोई किसी न किसी रूप में तनाव का सामना कर रहा है, तो समय है कि हम अपने जीवन में 'गतिशीलता' को एक आदत के रूप में शामिल करें, क्योंकि एक सक्रिय शरीर में ही एक शांत और खुशहाल मन बसता है।

सोनू कुमार
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II

महिला सशक्तिकरण : बदलाव की ओर एक कदम

"जब महिलाएँ आगे बढ़ती हैं, तो समाज प्रगति करता है।" यह पंक्ति आज के दौर में पूरी तरह सार्थक है। महिला सशक्तिकरण कोई नारा मात्र नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की आवश्यकता है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः"

अर्थात् जिस स्थान पर स्त्रियों की पूजा की जाती है और उनका सत्कार किया जाता है, उस स्थान पर देवता सदा निवास करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। जहाँ ऐसा नहीं होता है, वहाँ सभी धर्म और कर्म निष्फल होते हैं।

महिला सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ केवल अधिकार देना नहीं, बल्कि महिलाओं के भीतर आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जगाना है। जब महिला आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनती है, तो परिवार और समाज दोनों सशक्त होते हैं। सामाजिक सशक्तिकरण से उन्हें सम्मान और सुरक्षा मिलती है, वहीं राजनीतिक सशक्तिकरण से वे निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनती हैं।

महिला सशक्तिकरण का आशय है महिलाओं को उनके अधिकार, अवसर और निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करना, ताकि वे जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के समान योगदान दे सकें। भारतीय संविधान ने समानता का अधिकार देकर महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा दिया है, फिर भी लंबे समय तक महिलाएँ शिक्षा, संपत्ति, राजनीति और रोजगार जैसे क्षेत्रों से वंचित रहीं। पारंपरिक सोच और सामाजिक बंधनों ने उनके विकास की राह में बाधाएँ खड़ी कीं। परिणामस्वरूप, समाज का आधा हिस्सा प्रगति की मुख्यधारा से कट गया।

महिला सशक्तिकरण के तीन प्रमुख आयाम माने जाते हैं:

1. **आर्थिक सशक्तिकरण:** महिलाओं को शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसर देकर आत्मनिर्भर बनाना। जब महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त होंगी तभी वे अपने जीवन से जुड़े निर्णय आत्मविश्वास के साथ ले पाएँगी।
2. **सामाजिक सशक्तिकरण:** समाज में महिलाओं को समान सम्मान, सुरक्षा और अवसर उपलब्ध कराना। दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करना इसी का हिस्सा है।
3. **राजनीतिक सशक्तिकरण:** राजनीति और शासन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना, ताकि वे नीति-निर्माण और निर्णय-प्रक्रिया का हिस्सा बन सकें।

आज विश्व स्तर पर महिलाएँ विज्ञान, खेल, राजनीति, साहित्य और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही

हैं। भारत की महिलाएँ भी राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, अंतरिक्ष यात्री, वैज्ञानिक और सैन्य अधिकारी बनकर अपनी क्षमता सिद्ध कर चुकी हैं, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों और पिछड़े समाज में आज भी बहुत सारी महिलाएँ अशिक्षा, कुपोषण और भेदभाव का सामना कर रही हैं।

लैंगिक समानता एक सामाजिक-राजनीतिक आदर्श है जो मानवीय सभ्यता व संस्कृति के विकास के साथ-साथ विकसित हुई है। लैंगिक समानता की स्थापना हेतु लिंग आधारित भेदों को दूर करना आवश्यक है। लिंग भेद का शाब्दिक अर्थ है लिंग आधारित भेद-भाव या असमानता। चूंकि भेद-भाव सामान्यतः महिलाओं के साथ होता है। अतः यहाँ लिंग भेद का आशय लिंग के आधार पर महिलाओं के साथ किए जाने वाले भेद से है। कुछ अपवादात्मक स्थितियों को छोड़कर मानव समाज दो लिंगों में विभाजित है- पुरुष और स्त्री। लिंग भेद की अवधारणा को समझने के लिए यौन (Sex) तथा लिंग (Gender) के अंतर को समझना आवश्यक है। यौन का आशय पुरूष व नारी के मध्य के जैव वैज्ञानिक अंतर/ प्राकृतिक अंतर से है। स्पष्टतः यौन एक जैविक (Biological) अवधारणा है। दूसरी ओर लिंग पुरूष व नारी के मध्य के इस मौलिक विभेद से जुड़े अनेक सामाजिक व सांस्कृतिक अर्थों एवं संदर्भों को इंगित करता है। दूसरे शब्दों में स्त्री का एक विशेष प्रकार की जैविक संरचना के साथ जन्म लेना एक प्राकृतिक चीज है जिस पर उसका कोई वश नहीं है। लेकिन लिंग प्राकृतिक नहीं है बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से गढ़ी हुई चीज है जो बदल सकती है और बदलती भी रही है। अगर लिंग प्राकृतिक होता तो फिर स्त्री व पुरूष की स्थिति सर्वत्र, हमेशा एक जैसी होती, लेकिन साक्ष्य यह बताते हैं कि विभिन्न समाजों में यह संबंध विभिन्न प्रकार का है तथा विभिन्न कालों में यह संबंध बदलता भी रहा है। स्पष्टतः लिंग भेद का तात्पर्य जैविकीय या शारीरिक भेद से नहीं है, बल्कि स्त्री व पुरूष के मध्य सामाजिक संदर्भों में कृत्रिम विभेद से है। चूंकि यह भेद कृत्रिम है अतः इसे दूर किया जा सकता है। यहाँ लिंग भेद को दूर करने का आशय यह है कि स्त्री व पुरुष दोनों को मनुष्य के रूप में समान अवसर, अधिकार, गौरव व गरिमा दी जाए।

सामाजिक असमानता को दूर करना आवश्यक क्यों:

1. **नैतिक दृष्टिकोण:** सभी व्यक्तियों को यह नैतिक अधिकार है कि उन्हें भी अन्य लोगों के समान अपने विकास का समान अवसर मिले। स्त्रियों को यह अवसर लैंगिक समानता के बिना प्राप्त नहीं हो सकता है।
2. **सामाजिक दृष्टिकोण:** समाज के सर्वांगीण विकास एवं सामाजिक समरसता के लिए यह आवश्यक है कि समाज के सभी लोग समाजहित व राष्ट्रहित में योगदान दें। इसके लिए आवश्यक है कि लिंग आधारित भेद समाप्त हो और महिलाओं को भी पुरूषों के समान अधिकार, अवसर व गरिमा मिले।
3. **राजनैतिक दृष्टिकोण:** स्वतंत्रता, समानता व न्याय रूपी आदर्श की प्राप्ति तभी सार्थक हो सकती है जब सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था में लिंग समानता हो। बिना महिला सशक्तिकरण के समाज और राष्ट्र का संतुलित विकास संभव नहीं है। जिस प्रकार एक पक्षी केवल एक पंख से उड़ नहीं सकता, उसी प्रकार किसी भी देश का विकास महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना अधूरा है।

नारी है जीवन की धारा,
नारी ही शक्ति का प्यारा।
घर आँगन में दीप जलाती,
संघर्षों से राह बनाती।
उड़ने दो उसे नभ के पार,
नारी है भविष्य की धार।
सम्मान दो उसके सपनों को,
सशक्त करो उसकी बाँहों को।।

अतः आवश्यक है कि शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सुरक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर प्रदान किए जाएँ। जब महिला सशक्त होगी तभी परिवार, समाज और राष्ट्र सशक्त होगा।

हरित और संधारणीय तकनीक

हरित और संधारणीय तकनीकों (Green and Sustainable Technologies) का उद्देश्य पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना तकनीकी विकास को बढ़ावा देना है। ये तकनीकें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करती हैं, प्रदूषण को कम करती हैं और ऊर्जा की खपत को घटाती हैं। नीचे कुछ प्रमुख हरित और संधारणीय तकनीकों को बताया गया है:

हरित और संधारणीय तकनीकों के प्रकार:

1. **सौर ऊर्जा तकनीक (Solar Energy Technology):**
- सूरज की रोशनी को बिजली में बदलने वाली तकनीक, जैसे- सोलर पैनल, सोलर हीटर इत्यादि

2. **पवन ऊर्जा (Wind Energy):**
- हवा की गति से बिजली उत्पन्न करना, जैसे- पवन चक्कियाँ (Wind Turbines)

3. **जैविक ईंधन तकनीकी (Biofuel & Biomass Technology):**
- पौधों और कृषि अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पन्न करना।
- पर्यावरण को कम प्रदूषित करता है।

4. **जल विद्युत तकनीकी (Hydropower Technology):**
- बहते पानी की ऊर्जा से बिजली बनाना।
- यह अक्षय (Renewable) ऊर्जा स्रोत है।

5. **हरित भवन तकनीकी (Green Building Technology):**
- ऐसे भवन जो ऊर्जा की बचत करते हैं, वर्षा जल संचयन करते हैं और प्राकृतिक रोशनी का उपयोग करते हैं। जैसे- LEED प्रमाणित इमारतें।

6. **इलेक्ट्रिक वाहन (Electric Vehicles- EVs):**
- पेट्रोल-डीज़ल की जगह बैटरी से चलने वाले वाहन।
- कार्बन उत्सर्जन में भारी कमी लाते हैं।

7. **पुनर्चक्रण और अपशिष्ट प्रबंधन तकनीक (Recycling & Waste Management Technology):**
- पुराने उत्पादों को फिर से उपयोगी बनाना, जैसे: प्लास्टिक के सामानों का पुनर्चक्रण और कंपोस्टिंग।

8. **स्मार्ट ग्रिड तकनीक (Smart Grid Technology)**
- यह बिजली आपूर्ति को कुशल और पर्यावरण के अनुकूल बनाती है।
- ऊर्जा की मांग और आपूर्ति का कुशल प्रबंधन।

हरित तकनीकी अपनाने के लाभ:
- पर्यावरण की रक्षा
- ऊर्जा की बचत
- जलवायु परिवर्तन की रोकथाम
- स्वच्छ जीवनशैली को प्रोत्साहन
- लंबे समय तक सतत विकास

अंकित आसीवाल
वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक

वैश्विक परिदृश्य में "वसुधैव कुटुंबकम" का महत्व

रमेश पटनायक
कार्यालय अधीक्षक

"वसुधैव कुटुंबकम" का शाब्दिक अर्थ है "सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है"। यह सिद्धांत प्राचीन भारतीय दर्शन का अभिन्न हिस्सा है और आज भी समकालीन दुनिया के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। इस दर्शन का मूल स्रोत महाउपनिषद में पाया जाता है जो वैदिक साहित्य का हिस्सा है। इस विचारधारा का संदेश है कि पूरी मानवता, चाहे वह विभिन्न जातियों, संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं या भौगोलिक सीमाओं में विभाजित हो, अंततः एक ही परिवार का हिस्सा है। यह अवधारणा न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक एकता की वकालत करती है, बल्कि पारस्परिक प्रेम, करुणा और सह-अस्तित्व के सिद्धांत को भी प्रोत्साहित करती है।

"वसुधैव कुटुंबकम" की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: "वसुधैव कुटुंबकम" का उल्लेख पहली बार महाउपनिषद में मिलता है, जहां यह बताया गया है कि संसार का हर व्यक्ति एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। यह विचार उस समय की भारतीय सोच का प्रतीक था, जिसमें विश्व एकता और सार्वभौमिकता को महत्व दिया जाता था। वैदिक युग में समाज धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित था और इस सिद्धांत ने धार्मिक और सामाजिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समाज और संस्कृति पर प्रभाव: "वसुधैव कुटुंबकम" के सिद्धांत ने भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को प्रभावित किया है। इस विचार ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया, जो विविधता का सम्मान करती है और विभिन्नता में एकता के महत्व को समझती है। भारतीय समाज में सदियों से विभिन्न धर्म, भाषाएं और परंपराएं सह-अस्तित्व में रही हैं और इस सहिष्णुता और समर्पण का आधार "वसुधैव कुटुंबकम" जैसी विचारधाराएं रही हैं।

विश्वव्यापी भाईचारा: "वसुधैव कुटुंबकम" का मूल सिद्धांत यह है कि संपूर्ण मानवता एक परिवार है। इस विचारधारा के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी राष्ट्र, जाति या धर्म से हो, एक ही व्यापक परिवार का हिस्सा है। इस सिद्धांत के अनुसार, विश्व में सभी का समान महत्व है और हर किसी को समान सम्मान मिलना चाहिए। यह विचारधारा न केवल मानव जाति के लिए प्रेम और सहानुभूति की आवश्यकता को दर्शाती है, बल्कि यह भी सिखाती है कि विभिन्नता को

सम्मानित करना और दूसरों के साथ मिलकर शांति और सद्भाव बनाना कितना आवश्यक है।

यह दर्शन यह भी मानता है कि सभी मनुष्यों का उद्देश्य एक ही है जिससे एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सके। इस संदर्भ में, "वसुधैव कुटुंबकम" न केवल एक सामाजिक सिद्धांत है, बल्कि एक आध्यात्मिक संदेश भी है जो हमें यह सिखाता है कि हम सभी के बीच कोई सीमा नहीं होनी चाहिए। हम सभी एक ही स्रोत से आए हैं और एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। इसलिए, हमें एक-दूसरे का साथ देना चाहिए, सहयोग करना चाहिए और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना चाहिए।

मानवता की समानता: "वसुधैव कुटुंबकम" की सोच के अनुसार, किसी भी व्यक्ति को उसके धर्म, जाति या संस्कृति के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। यह विचारधारा यह भी सिखाती है कि मानवता की सभी विविधताओं के बावजूद सभी इंसान समान हैं, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से आते हों, उनका अस्तित्व और उनकी मान्यताएं समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस विचारधारा के अनुसार, कोई भी व्यक्ति दूसरों से ऊंचा या नीचा नहीं है और समाज के सभी लोगों को समान रूप से सम्मान और अवसर मिलने चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर प्रभाव: "वसुधैव कुटुंबकम" के सिद्धांत का महत्व केवल व्यक्तिगत या राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं है। यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यदि इस सिद्धांत को वैश्विक रूप से स्वीकार किया जाए, तो यह देशों के बीच तनाव और संघर्ष को कम करने में मदद कर सकता है। यह अवधारणा सभी देशों के लिए यह संदेश देती है कि वे आपसी सहयोग और सद्भाव के साथ मिलकर काम करें। इसका उद्देश्य युद्ध, घृणा और संघर्ष को समाप्त करना है और इसके स्थान पर शांति और परस्पर सम्मान को बढ़ावा देना है।

वैश्विक शांति और एकता का संदेश: आज की वैश्विक चुनौतियों जैसे- युद्ध, आतंकवाद, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानताओं के संदर्भ में "वसुधैव कुटुंबकम" का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। यदि विश्व के सभी राष्ट्र और समाज इस सिद्धांत को अपनाते हैं, तो यह वैश्विक शांति और समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। यह विचारधारा सिखाती है कि हमारी विविधताएं ही हमारी ताकत हैं और हमें इन विविधताओं को अपनाकर एक संयुक्त और समृद्ध विश्व का निर्माण करना चाहिए।

सहिष्णुता और सह-अस्तित्व: "वसुधैव कुटुंबकम" की सोच यह भी सिखाती है कि सहिष्णुता और सह-अस्तित्व के बिना समाज में शांति स्थापित नहीं हो सकती। यह विचारधारा मानती है कि विभिन्नता का सम्मान और स्वीकृति, समाज के लिए अनिवार्य है। इसमें धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक विविधता और विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने का महत्व है। इस सिद्धांत के अनुसार, विभिन्नता को समृद्धि के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि विभाजन के कारण के रूप में।

आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण: "वसुधैव कुटुंबकम" न केवल एक सामाजिक या राजनीतिक विचारधारा है, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण भी है। यह सिद्धांत मानवता को एक नैतिक और आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इसके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने आसपास के लोगों के प्रति दया, करुणा और प्रेम का प्रदर्शन करे। इस सिद्धांत में निहित संदेश यह है कि मानवता की सेवा करना, दूसरों की सहायता करना, और अपने जीवन को मानवता के कल्याण के लिए समर्पित करना ही सच्चे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन का प्रतीक है।

कोरापुट से विशाखापट्टनम तक बाइक की सवारी: प्राकृतिक सौंदर्य, रोमांच और अनुभवों से परिपूर्ण यात्रावृत्त

बाइक की सवारी हमेशा से ही रोमांच और स्वतंत्रता का प्रतीक रही है। जब यह सवारी प्रकृति की गोद में हो, तो अनुभव और भी ख़ास हो जाता है। कोरापुट से विशाखापट्टनम तक की मेरी बाइक की यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही थी, हर मोड़ पर रोमांच, हर दृश्य में सुंदरता और प्रत्येक क्षण एक नई कहानी।

कोरापुट, ओड़िशा का एक छोटा मगर बेहद ख़ूबसूरत पहाड़ी जिला है। यह जिला अपनी हरियाली, आदिवासी संस्कृति और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। सुबह के क़रीब छह बजे मैंने अपनी बाइक पर सफ़र की शुरुआत की। आसमान में हल्की धुँध, ठंडी हवा और सूरज की पहली किरणों ने मेरे सफ़र की शुरुआत को यादगार बना दिया।

शुरुआत के कुछ किलोमीटर तक रास्ता घुमावदार था, कभी पहाड़ी की चढ़ाई तो कभी नीचे की ओर ढलान। सड़क के दोनों ओर घने जंगल और बीच-बीच में छोटे-छोटे गाँव दिखाई देते थे। यहाँ के लोग बहुत मिलनसार थे। यह हमें एहसास दिलाता है कि असली भारत इन ग्रामीण इलाकों में ही बसता है। यहाँ मैंने एक चाय-कॉफ़ी की दुकान पर रुककर गर्म कॉफ़ी की चुस्कियों के साथ स्थानीय लोगों से बातचीत की। वे मेरी बाइक और यात्रा के बारे में जानकर बहुत खुश दिखाई पड़े। इसके बाद मैंने अराकू घाटी की ओर रुख़ किया। अराकू घाटी का ख़ूबसूरत रास्ता, घाटियों की हरियाली, कॉफी के बाग़ान और ताज़ी हवा ने मेरे मन को तरोताज़ा कर दिया। यहाँ से विशाखापटनम की दूरी लगभग 110 किलोमीटर रह जाती है, लेकिन रास्ता उतना ही मनोरम और शांत था।

जैसे-जैसे मैं विशाखापट्टनम के क़रीब पहुँचा, मौसम गर्म होने लगा। हवा में नमी बढ़ने लगी। यह वह बिंदु होता है जहाँ राइडर को एक अलग तरह का उत्साह महसूस होता है- 'पहाड़ों से सागर तक का परिवर्तन'। सागर तट पर पहुंचकर बाइक से उतरते ही नमकीन हवा और लहरों की आवाज़ ने मानो मेरा स्वागत किया। दूर-दूर तक फैला नीला सागर, रेत पर आती-जाती लहरें और आसमान में उड़ते समुद्री पक्षी- यह सब आँखों को सुकून देने वाला था। कुल मिलाकर कोरापुट से विशाखापट्टनम की यह बाइक यात्रा सिर्फ़ एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा नहीं थी, बल्कि यह प्रकृति के विभिन्न रूपों, ग्रामीण जीवन की सादगी और शहरी ऊर्जा की अद्भुत संगम का अनुभव था। इस बाइक यात्रा ने मुझे यह सीख दी है कि कभी-कभी मंज़िल से ज़्यादा सफ़र का मज़ा लेना ज़रूरी है। यह अनुभव निश्चित रूप से मेरी यादों में हमेशा ताज़ा रहेगा।

"सुरक्षित चलें- हेलमेट, दस्ताने, राइडिंग गिअर पहने और हर मोड़ का आनंद लें।"

कामड़ी मयुरेश गोपाल
वैज्ञानिक सहायक

खुशहाल जीवन के लिए अच्छे स्वास्थ्य का महत्व

गौतम सैनी
अवर श्रेणी लिपिक

अच्छा स्वास्थ्य हमारे जीवन का आधार है। जब हम स्वस्थ होते है, तभी हम अपने जीवन के अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर पते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के बिना, हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं और न ही अपने जीवन का आनंद ले सकते हैं।

स्वस्थ जीवन शैली के लाभ: स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से हमें कई प्रकार के लाभ होते है, जैसे कि:

1. **बीमारियों की जोखिमों को कम करना:** स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से हम कई प्रकार के बीमारियों की जोखिम को कम कर सकते हैं।
2. **ऊर्जा के स्तर में बढ़त:** स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से हमारे ऊर्जा के स्तर में बढ़त होती है जो हमें ऊर्जावान बनाने में सहायक होती है।
3. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है जिससे हमारे जीवन सकरात्मकता आती है।
4. **वित्तीय स्वास्थ्य में सुधार:** स्वास्थ्य जीवन शैली अपनाने से हमारा वित्तीय स्वास्थ्य भी सुधारता है जिसका हमारे आर्थिक स्थिति पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

स्वस्थ्य जीवन शैली कैसे अपनाए?: स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगा:

1. **स्वस्थ्य आहार:** हमें स्वस्थ आहार लेना चाहिए, जिसमें फल, सब्जियां और साबुत अनाज शामिल हो।
2. **नियमित व्यायाम:** हमें नियमित व्यायाम करना चाहिए, जैसे कि चलना, दौड़ना या योग या प्राणायाम करना।
3. **पर्याप्त नींद:** हमें पर्याप्त नींद लेनी चाहिए, जिससे हमारा शरीर और मन स्वस्थ्य रहें।
4. **धूम्रपान और शराब का सेवन नहीं करना:** हमें धूम्रपान और शराब का सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

अच्छे स्वास्थ्य का महत्व और स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाने के लाभों को समझने से हम अपने जीवन को स्वस्थ्य और सुखी बना सकते हैं। हमें स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए नियमित व्यायाम करना, स्वस्थ आहार लेना और पर्याप्त नींद लेनी चाहिए।

सुरजीत सिन्हा
वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक

एयरोस्पेस रक्षा के क्षेत्र में आकार बदलने वाली तकनीक

एयरोस्पेस रक्षा में आकार-परिवर्तन या रूपांतरण तकनीक अनुकूली प्रणालियों और सामग्रियों को संदर्भित करती है जो प्रदर्शन, उत्तरजीविता और मिशन लचीलेपन में सुधार के लिए वास्तविक समय में अपना आकार, संरचना या कॉन्फ़िगरेशन बदल सकती है। यह क्षेत्र उन्नत सामग्री विज्ञान, स्मार्ट संरचना, रोबोटिक्स और एआई-संचालित नियंत्रण प्रणालियों पर आधारित है। इसका एक एक विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है:

एयरोस्पेस रक्षा में आकार बदलने वाली प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग:

1. **मॉर्फिंग विंग्स वाला विमान:** पंख जो विभिन्न उड़ान व्यवस्थाओं (टेकऑफ़, सुपरसोनिक क्रूज़, स्टील्थ मोड आदि) में वायुगतिकीय को अनुकूलित करने के लिए स्पैन, स्वीप या कैमर को समायोजित करते हैं। जैसे- रक्षा उन्नत अनुसंधान परियोजना एजेंसी (DARPA) का मॉर्फ़िंग एयरक्राफ्ट स्ट्रक्चर्स (MAS) प्रोग्राम, नासा का मिशन एडेप्टिव विंग (अग्रणी लचीली विंग स्किन), अगली पीढ़ी के लड़ाकू जेट प्रछन्नता के लिए पंखों को अनुकूलित कर सकते हैं।
2. **प्रछन्नता और हस्ताक्षर प्रबंधन:** ऐसी सतहें जो रडार, थर्मल या ध्वनिक संकेतों को कम करने के लिए आकार या बनावट को बदलती हैं तथा मेटामटेरियल्स के साथ अनुकूली खाल जो रडार को अवशोषित या विक्षेपित करने के लिए पुन: कॉन्फ़िगर होती है। जैसे- लचीली कोटिंग्स जो खुरदरापन या सतह की ज्यामिति को बदल सकती हैं।
3. **मिसाइलें और यूएवी:**
   - अधिक गतिशीलता और रेंज के लिए मॉर्फिंग विंग्स/ पंखों वाले ड्रोन और मिसाइलें।
   - छोटे यूएवी इनका आकार बदल सकते हैं:
   - टोही मोड (कम गति, उच्च-सह्यता)।
   - आक्रमण मोड (उच्च गति, सक्रिय उड़ान)।
   - **उदाहरण:** मैसाचुसेट्स तकनीकी संस्थान (MIT) के मॉर्फिंग क्वाडकॉप्टर और रक्षा उन्नत अनुसंधान परियोजना एजेंसी के फोल्डिंग यूएवी डिज़ाइन।
4. **पुन: कॉन्फ़िगर करने योग्य अंतरिक्ष यान:**

उपग्रह जो आकार बदलते हैं:

- निचली कक्षा में एयरोब्रेकिंग।
- फोल्डेबल या एक्सपेंडेबल सौर पैनलों के माध्यम से ऊर्जा संचयन।
- परावर्तक क्रॉस-सेक्शन को बदलकर गुप्त संचालन।

5. **अनुकूली हथियार प्रणाली:**

- आकार बदलने वाले युद्ध सामग्री आवरण जो उड़ान के बीच में वायुगति को समायोजित करते हैं।
- अत्यधिक परिस्थितियों में स्थिरता में सुधार के लिए मॉर्फिंग नियंत्रण सतहों के साथ हाइपरसोनिक ग्लाइडर।

6. **जैव-प्रेरित रक्षा प्रणालियाँ:**

- **पक्षी की तरह आकार बदलना:** प्रछन्नता से प्रवेश के लिए पंखों को मोड़ना, सहनशक्ति के लिए फैलाना।
- **सेफलोपॉड जैसी खाल:** यूएवी छुपाने के लिए अनुकूली छलावरण और बनावट परिवर्तन।
- लचीली खालें जो मॉड्यूलर रोबोटिक प्रणालियों के लिए सांप जैसी गति की नकल करती हैं।

आकार-परिवर्तन को सक्षम करने वाली प्रमुख प्रौद्योगिकियाँ:

स्मार्ट मटेरियल्स:

- **आकार स्मृति मिश्र (एसएमए)-** ऐसी धातुएँ जो आकार अपने पुराने को "याद" रखती हैं और गर्म होने पर वापिस मूल अवस्था आ जाती हैं।
- **इलेक्ट्रोएक्टिव पॉलिमर (ईएपी)-** ऐसी मटेरियल्स जो वोल्टेज के तहत झुकती/ खिंचती हैं।
- **पीजोइलेक्ट्रिक एक्चुएटर्स-** बारीक आकार परिवर्तन के लिए उपयोग की जाने वाली छोटी विकृतियाँ।

अनुकूली सम्मिश्रण:

- एम्बेडेड एक्चुएशन के साथ हल्के कार्बन-फाइबर संरचनाएं।

एआई और स्वायत्त नियंत्रण:

- वायुगतिकीय और मिशन मांगों के आधार पर वास्तविक समय में उड़ान समायोजन।

मेटामटेरियल्स:

- अभियांत्रिक सतहें जो गुप्त रूप से विद्युत चुम्बकीय तरंगों में हेरफेर करती हैं।

सामरिक रक्षा लाभ:

- **बहु-भूमिका क्षमता:** एक प्लेटफ़ॉर्म स्वयं को पुन: कॉन्फ़िगर करके कई मिशनों को संभाल सकता है।
- **बढ़ी हुई उत्तरजीविता:** आकार बदलने वाले विमान/ ड्रोन पता लगाने की क्षमता को कम कर सकते हैं या खतरों से बच सकते हैं।
- **ईंधन और ऊर्जा दक्षता:** मॉर्फिंग संरचनाएं ड्रैग को कम करती हैं और लिफ्ट में सुधार करती हैं।
- **परिचालन लचीलापन:** विमान या यूएवी तेजी से बदलते युद्धक्षेत्र के वातावरण के अनुकूल हो सकते हैं।

आकार-परिवर्तनशील (मॉर्फिंग) एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी में भारत की प्रगति:

1) डीआरडीओ के लिए आईआईटी मद्रास में मॉर्फिंग विंग का विकास:

परियोजना अवलोकन: रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने आईआईटी मद्रास के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग के माध्यम से वर्ष 2017 में एक मॉर्फिंग विंग प्रोटोटाइप का निर्माण शुरू किया। इस आयताकार विंग को उड़ान के दौरान स्वचालित रूप से कैम्बर समायोजित करने, वायुगतिकी, ईंधन दक्षता और चपलता बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

भविष्य के अनुप्रयोग: प्रस्तावित एकीकरण में एएमसीए (उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान), तेजस एमके-II और यूएवी सिस्टम (मेल, हेल, औरा) सहित कई आशाजनक प्लेटफॉर्म शामिल हैं। इस परियोजना का लक्ष्य 2022 के अंत तक पूरा होना था।

2) स्वायत्त फ्लाइंग-विंग प्रदर्शक (स्विफ्ट/ घातक पाथवे):

स्विफ्ट यूएवी परीक्षण: रक्षा अनुसंधान एवं विकास संग के वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (ADE) ने टेललेस फ्लाइंग-विंग विन्यास में स्वायत्त फ्लाइंग विंग प्रौद्योगिकी प्रदर्शक- जिसे स्विफ्ट भी कहा जाता है, को विकसित किया है। इसकी पहली सफल उड़ान जुलाई 2022 में हुई थी, जिसके बाद कई परीक्षण हुए और दिसंबर 2023 तक पूरी तरह से स्वायत्त लैंडिंग हुई। इसकी प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

- हल्के कार्बन प्रीप्रेग कम्पोजिट एयरफ्रेम जिसमें एम्बेडेड फाइबर स्वास्थ्य-निगरानी सेंसर हैं।
- उन्नत नियंत्रण और एवियोनिक्स, जो गगन उपग्रह-सहायता प्राप्त नेविगेशन का उपयोग करके, बिना ग्राउंड रडार के संचालन को सक्षम बनाते हैं।

सामरिक महत्व: फ्लाइंग-विंग डिज़ाइन अंतर्निहित स्थिरता और दक्षता प्रदान करता है। स्विफ्ट की सफलता भारत को ऐसी उन्नत यूएवी तकनीक में महारत हासिल करने वाले कुछ देशों में शामिल करती है।

घातक यूसीएवी से लिंक: स्विफ्ट, डीआरडीओ की महत्वाकांक्षी परियोजना घातक का अग्रदूत है जो कि उड़ान-पंख संरचना पर आधारित एक गुप्त, लड़ाकू विमान से हल्का मानव रहित लड़ाकू हवाई वाहन (यूसीएवी) है, जिसे भविष्य में तैनाती के लिए योजनाबद्ध किया गया है।

3) निजी क्षेत्र का नवाचार- टाटा का मॉर्फिंग-विंग म्यूनिशन:

टाटा की यूएवी पहल: टाटा समूह एक मॉर्फिंग-विंग लोइटरिंग हथियार विकसित कर रहा है। 2.5 किलोग्राम के इस यूएवी में डायहेड्रल पंख हैं जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में स्थिरता, गतिशीलता और सहनशक्ति को बेहतर बनाने के लिए वास्तविक समय में अपने कोण को समायोजित करने में सक्षम हैं, खासकर पहाड़ी या उच्च-ऊंचाई वाली सीमाओं पर अभियानों के लिए।

खुली चुनौतियाँ:

- **स्केल-अप और टिकाऊपन:** आकार स्मृति मिश्र (SMA) एक्चुएशन स्पीड, थर्मल मैनेजमेंट और एयरो-लोड के तहत मॉर्फिंग स्किन की टिकाऊपन बड़े विमानों के लिए सीमित बनी हुई है। ये वैश्विक स्तर पर जानी-मानी बाधाएँ हैं और भारतीय शोधपत्रों में भी दिखाई देती हैं।
- **सिस्टम एकीकरण और प्रमाणन:** तकनीकी डेमो से तैनाती योग्य सैन्य यूएवी की ओर बढ़ने के लिए उड़ान नियंत्रण कानूनों, अतिरेक/ असफलता सुरक्षित तर्क और प्रमाणन प्रक्रियाओं के साथ एकीकरण की आवश्यकता होती है। ऐसे क्षेत्र जो बड़े भारतीय प्लेटफार्मों के लिए अभी तक सार्वजनिक रूप से रिपोर्ट नहीं किए गए हैं।

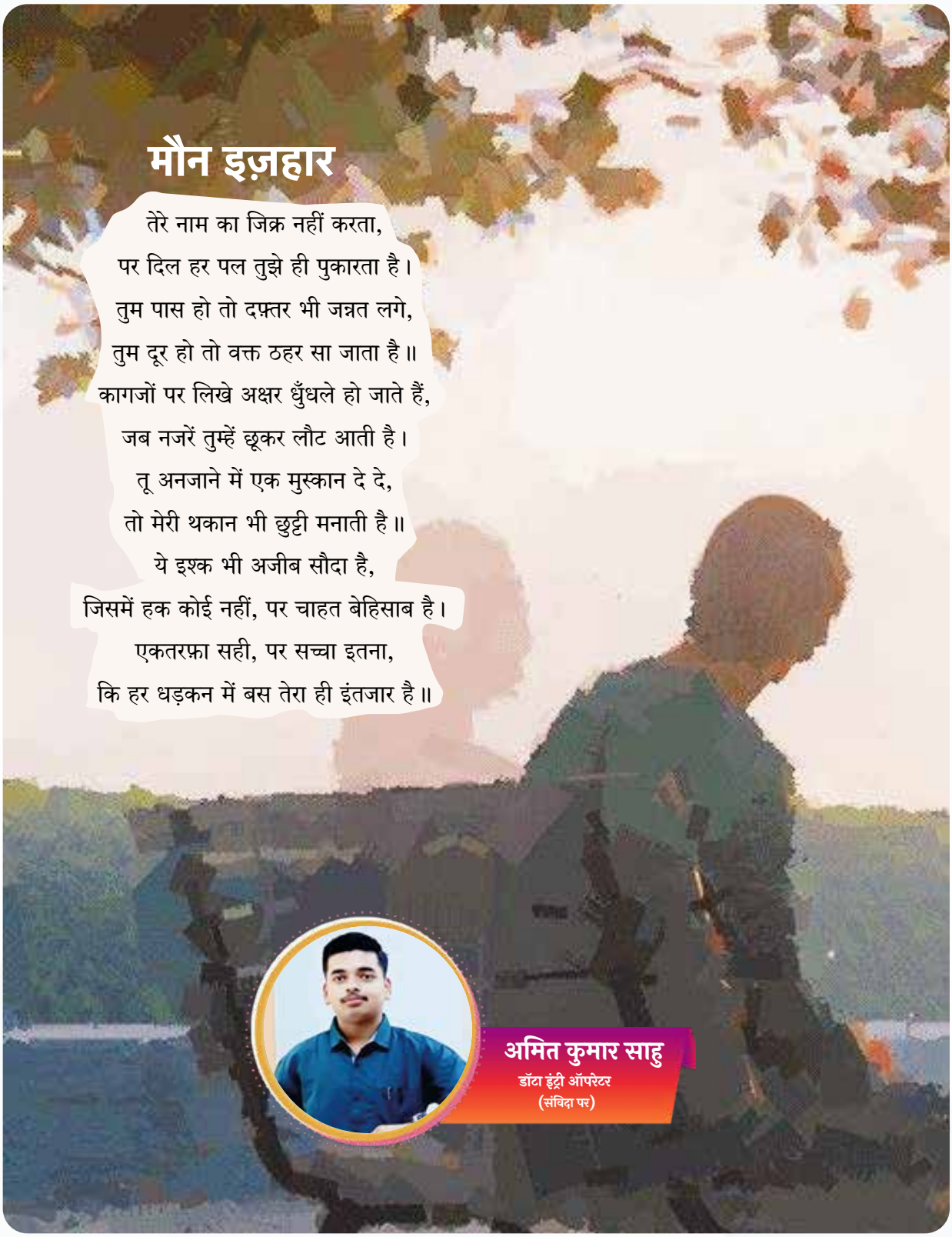

मौन इज़हार

तेरे नाम का जिक्र नहीं करता,
पर दिल हर पल तुझे ही पुकारता है।
तुम पास हो तो दफ़्तर भी जन्नत लगे,
तुम दूर हो तो वक्त ठहर सा जाता है॥
कागजों पर लिखे अक्षर धुँधले हो जाते हैं,
जब नजरें तुम्हें छूकर लौट आती है।
तू अनजाने में एक मुस्कान दे दे,
तो मेरी थकान भी छुट्टी मनाती है॥
ये इश्क भी अजीब सौदा है,
जिसमें हक कोई नहीं, पर चाहत बेहिसाब है।
एकतरफ़ा सही, पर सच्चा इतना,
कि हर धड़कन में बस तेरा ही इंतजार है॥

अमित कुमार साहु
डॉटा इंट्री ऑपरेटर
(संविदा पर)

वर्ष 2025 के दौरान कार्यालय में नवागंतक अधिकारियों का विवरण

श्रीमती एम. मीनक्षी, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

सामरिक प्रणाली गुणवत्ता आश्वासन समूह, हैदराबाद से स्थानांतरण के उपरांत दिनांक: 19 अप्रैल 2025 को कार्य-ग्रहण

श्री जितेंद्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

सामरिक प्रणाली गुणवत्ता आश्वासन समूह, हैदराबाद से स्थानांतरण के उपरांत दिनांक: 19 अप्रैल 2025 को कार्य-ग्रहण

श्री जे. नवीन कुमार रेड्डी, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

क्षेत्रीय निदेशक का कार्यालय, वै.गु.आ.मनि., कोरवा, अमेठी से स्थानांतरण के उपरांत दिनांक:02 अगस्त 2025 को कार्य-ग्रहण

श्री मदन मोहन सेनापति, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II

अपर महानिदेशक का कार्यालय, वै.गु.आ.मनि., ओझर, नासिक से स्थानांतरण के उपरांत दिनांक:30 अप्रैल 2025 को कार्य-ग्रहण

श्री सोनू कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II

इंजीनियरिंग सेवा परीक्षा-2023 के अंतर्गत नई नियुक्ति के उपरांत दिनांक:12 जून 2025 को कार्य-ग्रहण

श्री जी. प्रकासराव, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक

अपर महानिदेशक का कार्यालय (दक्षिण अंचल), वै.गु.आ.मनि., विमानपुरा, बैंगलुरु से स्थानांतरण के उपरांत दिनांक: 09 अप्रैल 2025 को कार्य-ग्रहण

वर्ष 2025 के दौरान इस कार्यालय से स्थानांतरित अधिकारियों का विवरण

श्री डी. जयरामुलु, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी

दिनांक:17 अप्रैल 2025 को इस कार्यालय से एसएसक्यूएजी, बैंगलुरु के लिए कार्यमुक्त

श्री मनमोहन मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

दिनांक:19 अप्रैल 2025 को इस कार्यालय से अपर महानिदेशक का कार्यालय (द.अं.), वै.गु.आ.मनि., विमानपुरा, बैंगलुरु के लिए कार्यमुक्त

श्री चंद्र केतु सिंह , वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-I

दिनांक:15 अप्रैल 2025 को इस कार्यालय से मुख्यालय, वै.गु.आ.मनि., नई दिल्ली के लिए कार्यमुक्त

मो. अज़हर , वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II

दिनांक:15 अप्रैल 2025 को इस कार्यालय से अपर महानिदेशक का कार्यालय,(उ.एवं म.क्षेत्र), वै.गु.आ.मनि., लखनऊ के लिए कार्यमुक्त

श्री राजेश पंडिता , वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II

दिनांक: 16 अप्रैल 2025 को इस कार्यालय से क्षेत्रीय निदेशक का कार्यालय, वै.गु.आ. (शस्त्र) देहू रोड, पुणे के लिए कार्यमुक्त

श्री सुरेंद्र सिंह , कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी

दिनांक:19 अप्रैल 2025 को इस कार्यालय से क्षेत्रीय निदेशक का कार्यालय, वै.गु.आ.मनि., रक्षा मंत्रालय, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश के लिए कार्यमुक्त

वर्ष 2024-25 के दौरान कार्यालय में विशिष्ट योगदान के लिए महानिदेशक, वै.गु.आ. से सम्मानित अधिकारीगण:

अपर महानिदेशक, कोरापुट महोदय से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते श्री अनूप पी., व.वै.अ.- II

अपर महानिदेशक, कोरापुट महोदय से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते श्री के. हेमारूणा प्रभाश, व.वै.अ.- II

अपर महानिदेशक, कोरापुट महोदय से प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते श्री उमेश कुमार प्रजापति, क.अनु.अधि.

महानिदेशक प्रशस्ति पत्र से सम्मानित अधिकारियों का अपर महानिदेशक महोदय के साथ संयुक्त फोटो

जुलाई 2025 के दौरान कार्यालय में आयोजित चौथे अपर महानिदेशक सम्मेलन की कुछ विशेष झलकियां

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, कोरापुट प्रभाग द्वारा 240 इंजनों के विनिर्माण के अंतर्गत भारतीय वायु सेना को पहला इंजन प्रदान करते वरिष्ठ अधिकारीगण

जनवरी 2025 के दौरान कार्यालय में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा कार्यशाला-सह-अभिविन्यास कार्यक्रम की कुछ झलकियां

कार्यालय परिसर में 72वां वै.गु.आ.मनि. स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

कार्यालय की दसवीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर हिंदीतर प्रदेश के अधिकारियों को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा जारी 'देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' पुस्तक भेंट कर अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करते आदरणीय अध्यक्ष महोदय

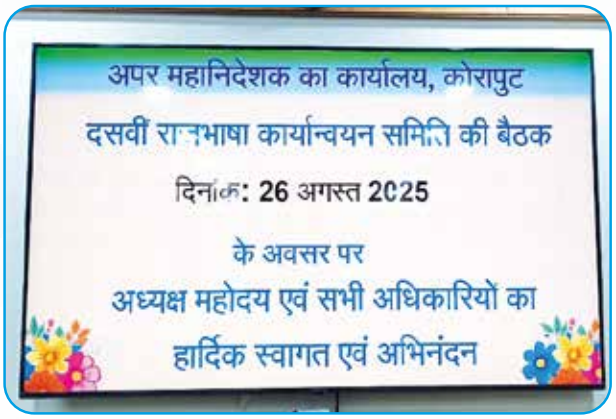

कार्यालय की 10वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

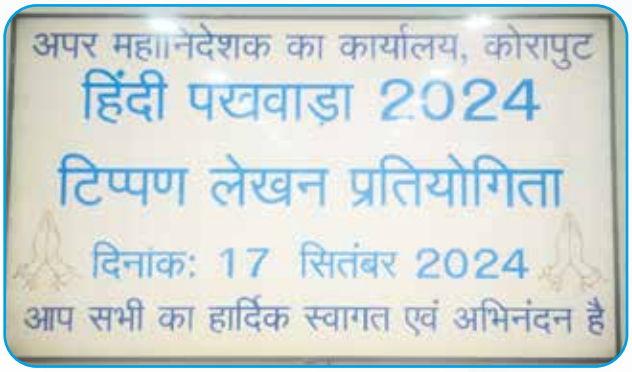

हिंदी पखवाड़ा 2024

हिन्दी पखवाड़ा समारोह

प्रश्न-5. राजभाषा नियम 1976 के नियम-05 का संबंध किससे है?
मुख्य अतिथि

हिन्दी पखवाड़ा समारोह
14 सितंबर

प्रतियोगिता का विषय
1. हिंदी राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में
हिंदी पखवाड़ा समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह

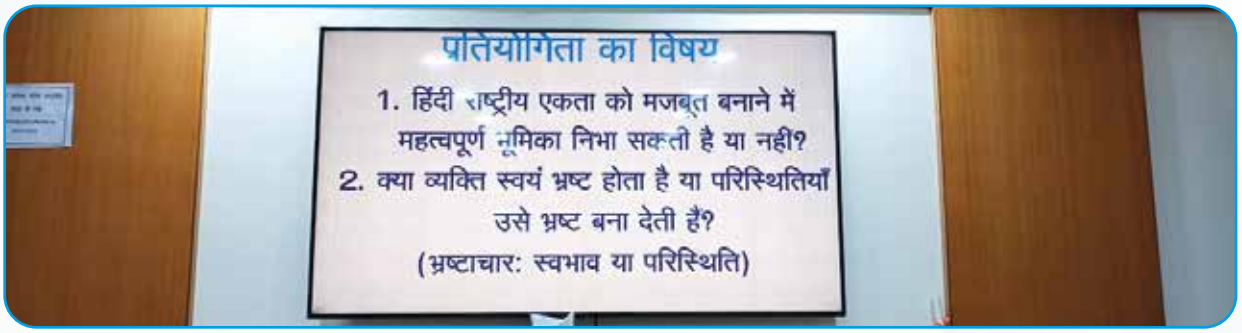
प्रतियोगिता का विषय
1. हिंदी राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में
महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है या नही?
2. क्या व्यक्ति स्वयं भ्रष्ट होता है या परिस्थितियाँ
उसे भ्रष्ट बना देती हैं?
(भ्रष्टाचार: स्वभाव या परिस्थिति)

हिंदी पखवाड़ा 2024 समापन समारोह एवं कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "आवेग" के चौथे अंक का विमोचन

समापन एवं पत्रिका विमोचन समारोह
दिनाक: 28 सितंबर 2024
आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है

समापन एवं पत्रिका विमोचन समारोह
दिनाक: 28 सितंबर 2024
आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है

समापन एवं पत्रिका विमोचन समारोह
दिनाक: 28 सितंबर 2024
आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है

हिंदी पखवाड़ा 2024
समापन एवं पत्रिका विमोचन समारोह
28 सितंबर 2024
का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है

एवं पत्रिका विमोचन समारोह
28 सितंबर 2024
का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत करते मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं वरिष्ठ अधिकारी

OADG KORAPUT

OADG KORAPUT

OADG KORAPUT

OADG KORAPUT

कार्यालय परिसर में आयोजित स्वच्छता अभियान में प्रतिभाग करते सभी अधिकारी एवं कर्मचारी

79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की कुछ झलकियाँ

79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर कार्यालय में आयोजित नारा लेखन प्रतियोगिता

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरन्तर प्रयासरत)

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते है कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरन्तर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावन और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। मैं, यह मानता हूँ कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी उससे जुड़े होते है। भाषा जहाँ अपनी संस्कृति विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि, यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है। फिर लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनता तभी कामकाज में सक्रिय रूप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज ऐसी भाषा में हो, जिसे वहाँ की जनता अच्छी तरह से समझ सकें।

– डॉ. शंकर दयाल शर्मा

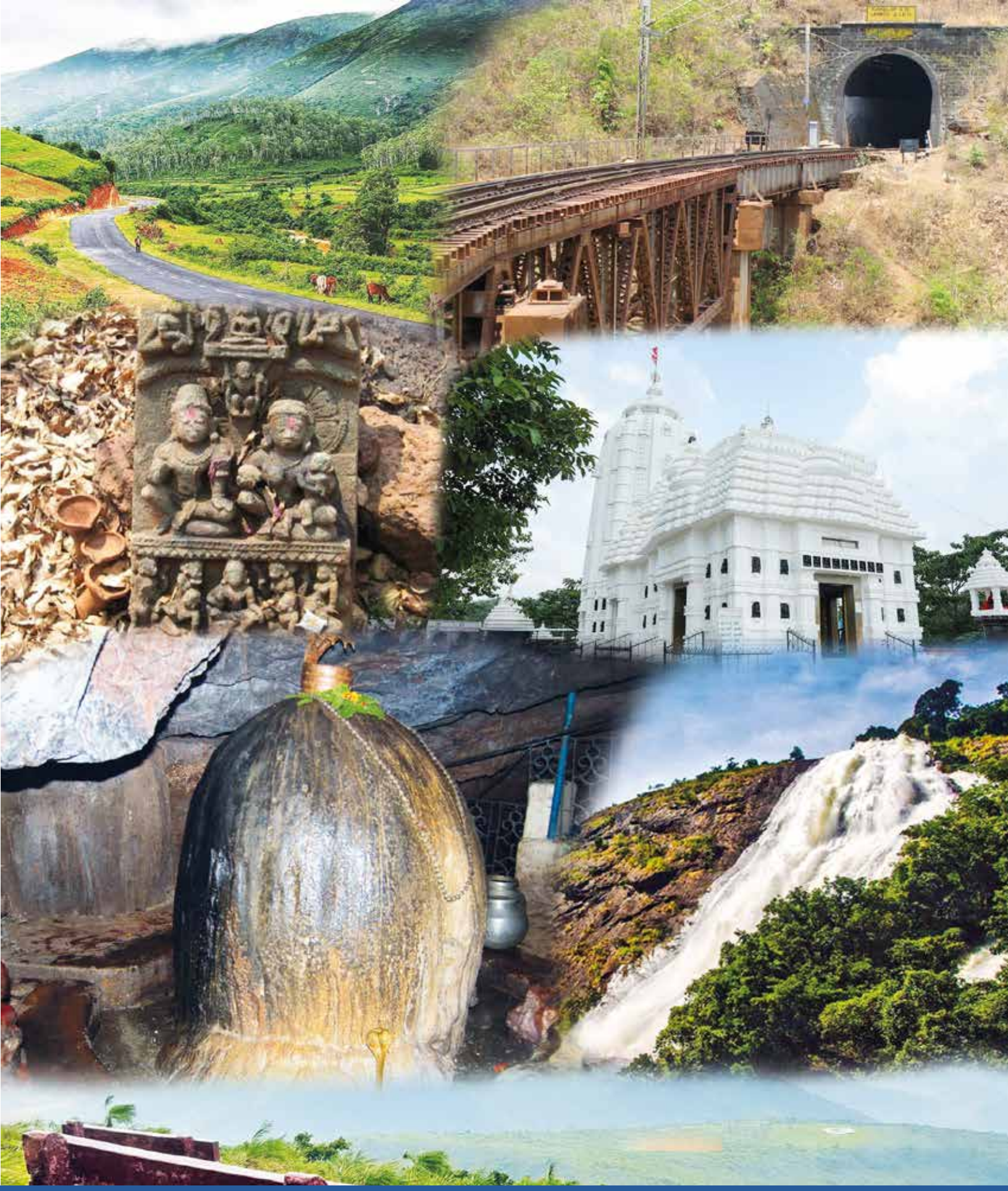

अपर महानिदेशक का कार्यालय

वैमानिक गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय, सुनाबेड़ा, कोरापुट, ओड़िशा-763002